भाग—1

I.C.H. के तहत

प्रान्तीय जागरुकता संस्थान,सतना (म0प्र0)

द्वारा संकलित

हमारी
कहावते / लोकोक्तियां

क्रमांक 1 से 224 तक

(क्रमसः पृश्ठ क्रमांक 1 से 20 तक)

I.C.H./ भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परम्पराओं का संरक्षण स्कीम 2014–15 के तहत

प्रान्तीय जागरुकता संस्थान,सतना (म0प्र0) द्वारा संकलित

विन्ध्यांचल (बघेलखण्ड) की बघेली कहावतें (उपाख्यान)

धौं कइसन कहित तैं मनई उख्खान–.....

भूमिका :– बारहमासी, नक्षत्रों का प्रभाव, वर्षा से संबंधित कहावतें, खेती किसानी,पशुओं की पहचान, लकड़ियों के गुण और उपयोग सहित कुछ अन्य मुहावरे लोकोक्तियां कहावतें जो जन जन की ज़बान पर रची–बसी हैं, ये कहावतें शुरू शुरू में किसी ग्रामीण मजदूर किसान के मुंह से निकली होंगी पर बाद में व्यापक लोक स्वीकृति मिल जाने के कारण के दूर–दूर तक फैलकर लोक की सम्पत्ति बन गई।

हमारी कहावतें/लोकोक्तियां निम्नुसार हैं .....

1. दऊ देवइयां मूसर टेढ़ –

   अर्थ – अप्रत्याशित लाभ में बाधक बनना।

2. एक बूंद जो चइत म परै, सहस बूंद सामन कै हरै।

   अर्थ – यदि चैत माह में एक बूंद पानी बरसता है तो उसके बदले सावन मास में एक हजार बूंदों की कमी हो जाती है।

3. सूम के धन शैतान खाय –

   अर्थ – कंजूस के धन का दुरुपयोग।

4. दक्खिन बरखे सद्दौं काल । एक न बरखै बरखा काल।।

   अर्थ – कभी–कभी अच्छी खासी वर्शा हो रही होती है फिर अचानक दक्षिण दि"ाा की ओर हवा चलने लगती है और एक दो दिन में सचमुच ही वर्षा रुक जाती है।

5. जब तक शक्ती तब तक भक्ती–

   अर्थ – भाक्ति के अनुसार कार्य।

6. घोखे विद्या खोदे पानी–

   अर्थ – विद्या के लिए अभ्यास जरूरी।

7. चैत मास दसमी बदी जो कहुं कोरी जाय। चौ मासे भर बादला भली भात बरसाय।।

   अर्थ – यदि चैत माह कृष्ण पक्ष की दसवीं को पानी नहीं बरसता तो वर्षा ऋतु में

चारों महीने अच्छी वर्षा होती है।

8. नीके केर जमाना नहि आय –

अर्थ –अच्छाई के समय आज नही है– सठं प्रति सठं।

9. नाक दूर कि हंसिया–

अर्थ – परीक्षण के लिए उकसाना।

10. घुंघुची अपनेन रंग बाउर–

अर्थ – अपने रंग रूप पर घमंड करना।

11. चइत के पछुआ भादो जला, भदौं पछुआ माघ म पला।

अर्थ – यदि चैत माह में पछुआ हवा चले तो भादों मास में अच्छी वर्षा होती है, पर यदि यही पछुआ भादों मास में चले तो समझ लेना चाहिए कि माघ मास में पाला लगेगा।

12. उजरे गांव पोड़की सुआसिन–

अर्थ – कमजोर व्यक्तियों पर शासन करना।

13. ओंठ चाटे पियास नहीं पटाय –

अर्थ–आव''यकता से कम प्राप्त होना।

14. घरी मा घर जरै अढ़ाई घरी भद्रा–

अर्थ– समयानुकूल काम करना।

15. एक बूंद जो चइत म परै, सहस बूंद सामन कै हरै।

अर्थः– यदि चैत के महीने में कभी पानी बरसने लगता हैतो यह तय है कि सावन सूखा जायेगा

और ऐसे मौके पर तो किसान के मुख से यह कहावत अपने आप निकल पड़ती है।

16. हर कउर मा सीताराम नहीं बोला जाय –

अर्थ–अतिशयोक्ति नहीं करना।

17. फूंक–फूंक के पांव धरै का चाही–

अर्थ–सावधानी बरतना।

18. उल्टा चोर कोतवाल का डांटै–

अर्थ– खुद गलती करना और सफाई देना या दूसरे को धमकाना।

19. चइत क पानी महा बेकार। खड़ी फसल में बंटाढार।।

अर्थ– चैत में बरसने वाला पानी बड़ा ही नुकसानदेह होता है, क्योंकि खड़ी फसल नष्ट हो जाती है।

20. आय फंसे सो आय फंसे–

अर्थ– इच्छा के विरुद्ध संकोच में पड़ना।

21. चोर–चोर मौसेरे भाई–

अर्थ– एक ही विचार के असामाजिक तत्व।

22. जेठ मास जो तपै निरासा। तब जानै बरखा कै आशा।।

अर्थ–जब जेठ माह में खूब गर्मी पड़े, तब समझो कि वर्षा ऋतु में अच्छी वर्षा होगी।

23. आपन खोर कुकुर बरियार–

अर्थ– अपने मुहल्ले में बल दिखाना।

24. अपने गइल मा कुकुरउ भोर होत है–

अर्थ– अपने घर या आपने दरवाजे में दवंगई/बहादुरी दिखाना।

25. उनके घर में उलटी गंगा बहत है–

अर्थ– परम्परा के विरुद्ध कार्य करना।

26. जेठ जरै माघ ठरै, गुड़ के डरी तबै मुंह परै।

अर्थ– यदि जेठ माह में तेज धूप और माघ माह में खूब ठंडी पड़ेगी, तभी गन्ने की फसल होगी और खूब गुड़ खाने को मिलेगा।

27. ऐरा गैरा नत्थू खैरा –

अर्थ–वजूदहीन, असभ्य व्यक्ति का बोधक।

28. ऐरे गैरे पच कल्यानी–

अर्थ–मूर्ख तथा पगलापन करने वाले को।

29. जेकर बनै असढ़वा, ओकर वारै मास।

अर्थ– जिस किसान की खेती अषाढ़ माह में समय पर हो गई, उसके बारहों महीने अच्छे ही अच्छे रहते हैं।

30. एक हाथ सिऐ त दुइ हाथ फारय –

अर्थ– आमद से ज्यादा नुकसान।

31. सामन सूख सियारी। भादों सूख उन्हारी।।

अर्थ–यदि सावन मास में वर्षा नहीं होती तो खरीफ की फसल सूख जाती है, पर अगर भादों

मास में वर्षा नहीं होती तो रबी फसल की संभावना भी क्षीण हो जाती है।

32. आवा न गा घरहूं के गा–

अर्थ–बड़ा घाटा पड़ना।

33. फकीर केर कम्बलै दुशाला आय –

अर्थ– थोड़े में ही सन्तु"ट रहना।

34. सामन भादौं खेत निदावै। वा किसान निकहा धन पावै।।

अर्थ–जो किसान सावन और भादों के महीने में अपने खेतों की निंदाई कराता है,

उसकी फसल अच्छी होती है। फलस्वरूप उसे अच्छी आमदनी होती है।

35. कंजरौ नोन पानी मानत है–

अर्थ – नमक का एहसान मानना चाहिए।

36. नरदा के पंचायत मा बखरी हारिगे –

अर्थ– छोटी वस्तु के न्याय में बड़ा नुकसान।

37. धन्न भाग जहां बरस कुमार।

अर्थ– वह गांव बहुत ही भाग्यशाली है, जहां क्वांर के महीने में वर्षा हो गई है।

38. गमार कै गारी हंसिके टारी–

अर्थ – छोटे लोगों के मुंह न लगना।

39. सूधे केर मुंह कूकुर चाटै–

अर्थ–अधिक सीधा होना भी नुकसानदायक है।

40. आवा मोखा लइगा तोखा–

अर्थ–धोखा में पड़ना।

41. तेरा कातिक तीन अषाढ़। चूक जाय ते जाय बजार।।

अर्थ—अषाढ़ माह में धान बोने का सही समय 3 दिन और कार्तिक में गेहूं बोने के सही दिन मात्र 13 होते हैं। जो किसान इन 3 और 13 महत्वपूर्ण दिनों में अपनी खेती नहीं बो पाते तो उनके खेत में अच्छी पैदावार नहीं होती। फलस्वरूप उन्हें बाजार से अनाज खरीदना पड़ता है।

42. पांचौं उंगली बराबर नहीं होंय –

अर्थ– सब लोग एक समान नहीं होते।

43. पानी बरखै आधा पूष। आधा गोहूं, आधा भूस।।

अर्थ—यदि पूष माह में जाड़े की वर्षा हो जाती है तो गेहूं के दाने और भूसे दोनों की पैदावार

बढ़ जाती है।

44. आपु गए जजमानऊ घालै–

अर्थ– खुद फंसना दूसरे को भी फंसाना।

45. जीतब–हारब भगवान के अधीन है–

अर्थ–ईश्वर पर विश्वास

46. आए कि खुशी न गए को गम–

अर्थ–दोनों में अलमस्त रहना।

47. तपै नौतपा नौ दिन जोय। तौ पुन बरखा पूरन होय।।

अर्थ– यदि मृगसिरा नक्षत्र के अंतिम नौ दिनों में तेज धूप रहती है, बादल बूंदों का मौसम नहीं

रहता तो उस वर्ष वर्षा ऋतु में अच्छी वर्षा होती है।

48. ऊंट चुरावै निहुरे–निहुरे–

अर्थ– बड़ा काम छुपाने से नहीं छिपता।

49. सिखए पूत दरबार नहीं जाय –

अर्थ–बिना पूर्ण अनुभव अधूरी शिक्षा काम नहीं आती।

50. मघा न बरखै भरै न खेत। माई न परसै भरै न पेट।।

अर्थ– यदि माघ नक्षत्र में पानी नहीं बरसता तो बंधी, बांध नहीं भरते। इसी प्रकार अगर माता

भोजन नहीं परोसती तो पुत्र का पेट नहीं भरता।

51. निबल पड़ेरुआ छत्तिस रोग–

अर्थ–दुर्दिन में आपत्तियों का दौर।

52. चईत गुड़ बइसाखै तेल। जेठ क पंथ असाढ़ क बेल।।
सामन साग न भादों दही। कुमार करइयाल न कातिक माही।।
अगहन जीरा पूषै घना। माघ न मिसरी फागुन चना।।
जे कोउ इनकर सेवन करिहैं। मरिहै न, त बेराम जरूरै परिहैं।।

अर्थ– चैत में गुड़, बैसाख में तेल नहीं खाना चाहिए, जेठ के महीने में यात्रा करना नुकसानदेह है। इसी तरह सावन मास में पत्ती वाली तरकारी भादौ माह में दही क्वार में करैला तथा कार्तिक माह मट्ठा खाना वर्जित है।

53. चिंह्आ मारे पानी नही कढ़य–

अर्थ– निर्बल को सताने से लाभ नहीं।

54. द"ी घोड़ी मरहठ भाशा–

अर्थ–बनावटीपना दिखाना।

55. पुखा पुनर्बस कोदों धान। मधा सुरेखा खेती आन।।

अर्थ– धान, कोदों की बुवाई के लिए पुष्य और पुनर्वस नक्षत्र उपयुक्त है, फिर मघा और अश्वलेखा तो तिल उड़द आदि बोने वाले नक्षत्र हैं।

56. बड़ी बड़ाई, फटही रजाई–

अर्थ–झूठा बड़प्पन दिखाना, असलियत का अभाव

57. माघ तिला तिल बाढ़ै। फागुन ग्वाड़ा काढ़ै।।

अर्थ– माघ में दिन एक एक तिल करके बढ़ने लगता है पर फागुन में तो बड़े–बड़े कदम बढ़ाकर चलता है अर्थात् बहुत बड़ा दिन होता है।

58. जानै न सानै तरी घियै घिव–

अर्थ–गोपनीयता न समझ पाना।

59. मंगनी के बरदा मसक के जोतय –

अर्थ–दूसरे की चीज का दुरुपयोग करना।

60. छूंछी तोखा कोउ न पूंछी–

अर्थ–निर्धन का कहीं सम्मान नहीं।

61. सेंत के चाउर मौसिया के सेराध–

अर्थ–मुफ्त की धान का दुरुपयोग।

62. पुरबा जो पुरबाई पाबै। सूखी नदियां नाव चलाबैं।।

अर्थः– सूखे की स्थिति में पूर्वा नक्षत्र मं हवा का रुख बदलकर पूर्व की ओर हो जाय तो अच्छी बरसात अच्छी फसल के आसार दिखाई देने लगते। सयानो का अनुभव

63. माठा का जाय दोहनी पाछे लुकावै–

अर्थ–अपना काम गुप्त रखना।

64. टाठी हेराय ता गगरी मा हाथ डारय –

अथ–भ्रम की स्थिति।

65. दूसरे के पतरी के मोट बरा–

अर्थ–दूसरे की वस्तु ज्यादा दिखना।

66. आव बरा मोरे मुंह परा–

अर्थ–बिना परिश्रम फल की कामना।

67. गमार मरै लकड़ी के भार–

अर्थ–अज्ञानतावस अन्याय सहना।

68. लेना एक न देना दो–

अर्थ– कोइ मतलब नही रखना।

69. कमाई न धमाई धरौ केर गमाई–

अर्थ–नुकसान पर नुकसान होना।

70. होइगा बिआह मोर करबे का–

अर्थ–काम निकलने पर अहं दिखाना।

71. उआ कबहूं सरे नहीं गन्धाय –

अर्थ–किसी काम में न आना।

72. छटिल परे केर हर गंगा–

अर्थ–मौके का लाभ उठाना।

73. जबरा मारै रोबै न देय –

अर्थ–सक्षम व्यक्ति का दबाव।

74. जाने हये तीस मार खां–

अर्थ – झूठी 'ोखी बघारना।

75. चमकै दक्खिन उत्तर छोर। तब जानै पानी का जोर।।

अर्थ –यदि दक्षिण और उत्तर दि''ाा की ओर बादल चमक रहे हों तो तेज वर्षा के आसार समझना चाहिए।

76. सौ सोनार केर एक लोहार केर–

अर्थ– एक का सौ के बराबर होना।

77. सांप के गोड़ नहीं देखात है–

अर्थ– अपनी परिस्थिति अपने को ही दिखती है।

78. ओरी के पानी बड़ेरी का जाय –

अर्थ–असम्भव का संभव होना।

79. अंधरन मा काने राजा–

अर्थ–अयोग्य लोगों पर थोड़ा पढ़ा व्यक्ति भी 'ाासन करता है।

80. बोलिस लोखरी फूला कांश। अब नहि आय बरखा कै आश।।

अर्थ –यदि लोमड़ी बोलने लगे और मैदान में उगे कांश के पौधे फूलने लगें तो समझ लेना चाहिए कि अब वर्षा ऋतु समाप्त होने वाली है।

81. उधौ का लेना न माधव का देना–

अर्थ–किसी का कर्जदार न होना।

82. राजन के घोड़े सूमन मा जोड़े–

अर्थ–दिखावा बड़ा खर्च कम

83. करिया बादर जिउ डेरबाबै। भुरबा बादर पानी लाबै।।

अर्थ —काला बादल देखकर भले ऐसा लगे कि भारी वर्षा होगी, पर वर्षा काले से नहीं भूरे बादल से होती है।

84. राजा के अगाड़ी घोड़ के पछाड़ी–

अर्थ–सावधानी बरतना चाहिए।

85. जइसै रहैं अपना, तइसैं देंय ढेकना–

अर्थ–अपने समान दूसरों को भी समझना।

86. ओइन गूना गूठैं, ओइन गमने जांय –

अर्थ– एक ही व्यक्ति की जिम्मेदारी।

87. बोली गोह फूल गा कांस। अब छांड़ा बरखा कै आस।।

अर्थ– यदि गोह बोलना शुरू कर दे और जंगल में कांस फूलने लगे तो समझ लेना चाहिए कि वर्षा ऋतु समाप्त होने वाली है।

88. अकेले श्याम बहू, सगला गांव फगुहार–

अर्थ–एक में सबका दावा।

89. अकेले चना भाड़ नहीं फोड़य–

अर्थ–बिना समूह काम नहीं चलता।

90. अपनै जांघि मूंदे अपने जांघि उघारै–

अर्थ – घर की गोपनीयता भंग करना।

91. पितर पाख जे बोई अरसी। ओखे घर में रुपिया बरसी।।

अर्थ —जो किसान पितर पक्ष यानी कि क्वांर माह के प्रथम पखवाड़े में अलसी की बुवाइ करता है, उसके घर में खूब रुपए आते हैं, क्योंकि अलसी की फसल अच्छी होती है।

92. अकेले हरदसिया सगला गांव रसिया–

अर्थ–एक ही पर सबकी निगाह।

93. लोह जानै लोहार जानै धौंकय वाले के बलाय जानै–

अर्थ– अपने को सुरक्षित रखना।

94. जेखे खेत परा नहिं गोबर। वा किसान का मानै दूबर।।

अर्थ–जिस किसान के खेत में गोबर की खाद नहीं पड़ी, उसे कमजोर किसान मानिये।

95. अबहिन आटा–दाल के भाव मालूम होय जई–

अर्थ–परीक्षा करना या वास्तविकता का सामना होना।

96. आपन दाम खोट त परोसिन कै कउन दो"ा–

अर्थ–खुद की कमी का एहसास।

97. जोतिस खेत घास न टूट। ओकर भाग सांझ के फूट।।

अर्थ– यदि किसान ने हल चलाया पर खेत की घास नहीं उखड़ी तो उस किसान की किस्मत तो उसी शाम को फूट गई, क्योंकि रात्रि में घास पुनः अंकुरित हो जाएगी और उस खेत में बोई गई फसल अच्छी नहीं होगी।

98. अपने गरज सवति के मइके जाय का परत है–

अर्थ– जहां इच्छा नही रहती अपने काम से वहां भी जाना पड़ता है।

99. अन्धे पावै कुत्ते खाय –

अर्थ–विचारहीन लोगों का समूह।

100. धान, पान, केरा। तीनौ पानी बोरा।।

अर्थ– धान, पान और केला इन तीनों को खूब सिंचाई की जरूरत पड़ती है, इसलिए इन्हें पानी में तर पौधा माना जाता है।

101. ओंठ चाटे पिआस नहीं पटाय –

अर्थ–अधिक आवश्यकता पर थोड़े से काम नहीं चलता।

102. अन्धा बांटै रेवड़ी चीन्ह–चीन्ह कर देय –

अर्थ–पक्षपात करके लाभ पहुंचाना।

103 आंख के अंध नाम नैन सुख–

अर्थ–कार्यप्रणाली में विपरीतता।

104. आंखी ओट पहार–

अर्थ–आंख से ओझल वस्तु से ध्यान हटना।

105. आसमान से गिरा खजूर मा अंटका–

अर्थ–एक से बचना दूसरे से फंसना।

106. आपन इज्जत अपने हाथ रहति है–

अर्थ–अपना सम्मान खुद बचाना।

107. आठ बराती नौ पोंगेदार–

अर्थ–मतलब के लोग कम बेकार लोग जादा।

108. आपन लड़िका दुसरे के मेहेरिया अच्छी लागति है–

अर्थ–स्वार्थ दृ”ट होना।

109. खाद डारे कै खेती। नहीं नदी कै रेती।।

अर्थ– यदि खेत में खाद डाली जाय, तब तो पैदावार होगी, अगर खाद नहीं डाली गई, तब तो नदी की रेत और खेत की मिट्टी में कोई अंतर नहीं।

110. आम के आम गुठलियों के दाम–

अर्थ– डबल फायदा होना।

111. अधरम से धन होत है, बरि”ा पांच औ सात–

अर्थ–अन्याय की सम्पत्ति क्षणिक होती है।

112. आपन पेट त कुकुरउ बिलारी भरि लेत हैं–

अर्थ–स्वार्थपूर्ण भावना।

113. बैल अगोतर, भइंस पछोतर।

अर्थ– बैल का कन्धे वाला अग्रभाग पुष्ट होना चाहिए पर भैंस का थन वाला पिछला भाग।

114. आगी लगाय के पानी का दौड़य–

अर्थ–काम बिगाड़कर बनाने की कोशिश

115. आंखी फूटय पीर पटाय –

अर्थ–किसी तरह झगड़ा निपटाना।

116. आंधर आंखी पावय त पतिआय –

अर्थ–कुछ आशा हो तो हिम्मत बढ़े।

117. आपन हथा जगन्नथा–

अर्थ–अपने हाथ मलिकाना खर्च करो मनमाना।

118. आपन हार मेहेरिया के मार केसे कहै–

अर्थ–अपनी कमजोरी छिपाना।

119. आगे नात न पीछे पगहा, तेखे नांव न रोवै गदहा–

अर्थ–लावारिस व्यक्ति।

120. आंधी छोड़ सइघ का धावय, आधिउ जाय न पूरी पावय –

अर्थ–लालच में पड़ना।

121. आन के धन का चोर रोवय –

अर्थ– दूसरे के धन से ई''र्या करना

122. बैल बेसाहैं कजरा। दाम भले होय अगरा।।

अर्थ– हम''ा कजरारी आंखों वाला बैल खरीदना चाहिए, भले ही दाम अधिक देना पड़े, क्योंकि कजरारी आंखों वाला बैल चलने में तेज होता है।

123. अपना रख पराया चख–

अर्थ–अपना बचाना दूसरे का उड़ाना।

124. आंखी न कान कजरउटा नौ ठे–

अर्थ–नाकाबिल होते हुए दिखाव फिजूल खर्ची।

125. आंधर के आगे रोवय, आपन दीदा खोवय –

अर्थ–नासमझ से फरियाद।

126. अपना दीजै दु''मन कीजै–

अर्थ–उधार देकर दु''मनी लेना।

127. आई कौड़िया आई बुद्ध गई कौड़िया गई बुद्धि –

अर्थ–पैसा आने पर बुद्धि आ जाती है और जााने चली जाती है।

128. आपु गए जजमानउ घालै–

अर्थ–खुद बिगड़ना औरों को भी बिगाड़ना।

129. आवा मोखा लइगा तोखा–

अर्थ–दूसरे का हक औरों को देना।

130. अपने खोर कुकुर बरियार–

अर्थ–अपने दल के साथ दबंगई दिखाना।

131. आधे मा अजगर आधे मा सबघर–

अर्थ–अकेले ज्यादा कब्जा करना।

132. एक बात तुम सुना हमारी। बूढ़ बैल से भली कुदारी।।

अर्थ– तुम मेरी एक बात ध्यान से सुनो कि बूढ़ा बैल खरीदकर लाने से तो अच्छा है कि खेत की कुदाल से गुड़ाई कर ली जाय।

133. अघान रहै बकुली त तीत लागे मछरी–

अर्थ–सम्पन्नता में तिरस्कार।

134. आवत लक्ष्मी का कोऊ टटिया नहीं देय –

अर्थ– मिलने वाला लाभ लेना।

135. अतरे खेती दूसरे गाय। ना देखौ जो ओकर जाय।।

अर्थ– जो किसान एक दिन के अंतर से खेत घूमने नहीं जाता और हर दूसरे दिन अपनी गौशाला में जाकर गायों को नहीं देखता वह हमेशा घाटे में रहता है।

136. आपन तेल भंड़वा मा नाइले हमार करहिया रितइ दे–

अर्थ–अपना स्वार्थ साधना

137. आपन फूली न निहारय दुसरे के परि–परि झांकय –

अर्थ–अपना दोष न देना।

138. अपना खाना अपना कमाना–

अर्थ–स्वतंत्र जीवन सामाजिकता की कमी।

139. ठांढी खेती गाभिन गाय। तब जाना जब मुंह मा जाय।।

अर्थ– खेती में खड़ी फसल और गाभिन गाय को तब अपनी समझना चाहिए, जब फसल कटकर घर आ जाय और गाय बछड़ा पैदा कर दूध देने लगे, क्योंकि इनके साथ हमेशा अनिश्चितता खड़ी रहती है।

140. अंधरन मा काने राजा–

अर्थ–अयोग्य लोगों पर 'ाासन करना।

141. अंगुरी पकड़ायन ता पहुचै पकड़ि लिहिस–

अर्थ–थोड़े सहारा से आगे बढ़ना।

142. चींटी संचे तीतुर खाय। सूम का धन सइतान लइ जाय।।

अर्थ– चींटियां दानों को संचित करती हैं और तीतर उन दानों को खाते हैं, ठीक उसी तरह

जैसे सूम कंजूस का धन दूसरा कोई उपभोग करता है।

143. अब आवा ऊंट पहाड़ के नीचे–

अर्थ–सेर को सवा सेर मिलना।

144. औरत जब खिसिआय के दौरत, तब कुछ नहि औरत–

अर्थ–औरत से विवशता।

145. ओरी के पानी बड़ेरी का जाय –

अर्थ– असम्भव का सम्भव होना।

146. बार सुपेत न ओकर होय। त्रिफला से आपन सिर धोय।।

अर्थ– जो व्यक्ति हर्रा बहेरा और आंवले के भिगोये जल से अपने बालों को साफ करता है, उसके बाल पककर सफेद नहीं होते वे काले बने रहते हैं।

147. अधाधुंध के राज मा गदहा पंजीरी खाय –

अर्थ–कुशासन से मूर्खों को फायदा।

148. बिलारी क नेउना नहि पचै।

अर्थ– बिल्ली को नेनू (नवनीत) नहीं पचती। (सभी को सब चीज हजम नहीं होती)

149. आई मौज फकीर की दिया झोपड़ा फूंक–

अर्थ–विरक्त पुरु”ा मनमौजी होता है।

150.रोज भोर खटिया से उठ के पियै तुरंतै पानी।
ओके घर मा बैद न आबै बात ल्या या मानी।।

अर्थ– जो व्यक्ति सुबह खाट से उठते ही तुरंत पानी पीता है, उसके घर में वैद्य के आने की

जरूरत नहीं पड़ती, क्योंकि उसे कोई बीमारी नहीं घेरती।

151. अपने चाटे कोऊ गोर नहीं होय –

अर्थ– अपनो बड़ाई खुद करना।

152.बाघ मुखारी नहिं करै।

अर्थ– शेर कभी दातून नहीं करता। (शक्तिशाली के लिए कोई कानून कायदे नहीं होते)

153. आंधर का खबावै फेर घरे पहुंचावै–

अर्थ–किसी काम में झंझट

154. खेते लगी मकुइयां बारी। केखर हिम्मत मूड़ निकारी।।

अर्थ– जिसके खेत के चारों ओर मकोय की बाड़ लगी हो तो कोई दुस्साहसी जानवर तक उसमें सिर नहीं डाल सकता।

155. बिल्ली के भइंसी नहि लागैं।

अर्थ– बिल्ली की भैंस नहीं लगती पर उसे दूध की कभी कमी नहीं रहती।
(मौका तलाशते रहने वाले के लिए कोई चीज दुर्लभ नहीं)

156. आन के लरिका, टोरबा, आपन हीरालाल–

अर्थ–अपनी बड़ाई दसरों की निंदा

157. महुआ के टपके धरती नहिं फटै।

अर्थ –महुआ के टपकने से धरती नहीं फटतो। (थोड़ी भूलें नजर अन्दाज भी करना पड़ता है)

158. आप टेक निभाइस, मंसेरुआ के मेछा मुड़ाइस–

अर्थ–हठ के बस गलत काम करना।

159. दूध–बियारी जे करै सोधी हर्रे खाय। जानकर अइसा कहै व सौमा ठहराय।।

अर्थ –जो व्यक्ति व्यालू में दूध का सेवन और भोजन के उपरान्त शोधी हुई हर्र खाता है तो विद्वानों का कथन है कि वह शतायु होता है।

160. पेटे म मुसबा अस लोटब।

अर्थ –पेट में चूहे लोटना। (भूख के कारण बुरा हाल)

161. अउर बात सब खोटी, सही दाल और रोटी–

अर्थ–सिर्फ खाने को महत्व देना।

162. अहिर के बच्चा कबौ न सच्चा–

अर्थ–जातीय दो”ा

163. कडुवा तेल जो नाक लगाबै। ओकर नाक रोग मिट जाबै।।

अर्थ –जो सरसों का कड़वा तेल नाक में डालते हैं, उनके नाक के सभी रोग दूर हो जाते

164. य ता हमका आंखी फूट नहीं सोहाय –

अर्थ–किसी व्यक्ति के प्रति गुस्सा करना।

165. सांप के गोड़ सांपै क देखाथे।

अर्थ –सांप के पैर सांप को ही दिखाई देते हैं।

(अपने घर की बात वही जान सकता है, दूसरा नहीं)

166. य लरिका त काटी अंगुरी नहीं मूतय –

अर्थ –अकर्मण्यता का प्रतीक।

167. नीम गुन बत्तीस। हर्र गुन छत्तीस।।

अर्थ –नीम में यदि बत्तीस गुण हैं तो हर्र में छत्तीस गुण होते हैं।

168. केकरा केर बच्चे बिला खोदै जानाथै।

अर्थ –केकड़े का बच्चा यूं ही बिल खोदना जानता है। (कुछ गुण जन्मजात होते हैं, उन्हें अलग से नहीं सीखना पड़ता)

169. इहां दूध के धुला कोऊ नहीं आय –

अर्थ–सबके ईमानदारी में ‘ाक।

170. य कान से सुनै व कान से निकारि देय –

अर्थ–अनसुनी करना।

171. है महुआ केतना उपकारी। वमा न घाला कोऊ कुल्हारी।।

अर्थ –महुआ का पौधा कितना उपकार करने वाला होता है कि उसके फल से तेल और फूल से तरह–तरह के व्यंजन बनते हैं, इसलिए उसके ऊपर कोई कुल्हाड़ी न चलाए।

172. य हमका तेल के छांह से देखत है–

अर्थ–अधिक ई”र्या करना।

173. लहटी गाय गोलइंदा खाय। धउर धउर मउहारे जाय।।

अर्थ –जो गाय एक बार महुए के फल का स्वाद पा जाती है, वह बार–बार महुआ के घने पेड़ों वाले जंगल की ओर भागती है। (किसी चीज में आशक्त हो जाना)

174. य त कबहूं सरे नही गन्धाय –

अर्थ–कभी किसी के काम में न आना

175. तेंदू महुआ जामुन आमा। फर लकड़ी सब आमैं कामा।।

अर्थ –तेंदू, महुआ, जामुन और आम ये इतने उपयोगी पेड़ हैं, जिसकी लकड़ी और फल दोनों हमारे काम आते हैं।

176. य त आंधी पानी से लड़ति है–

अर्थ–अति विवादी स्वभाव।

177. उहै बांस के डलिया टोपरा ओही के दउरी सूप।

अर्थ –उसी बांस के डलिया टोकना बनते हैं और उसी की दौरी और सूप भी। (एक ही वस्तु से बनाने वाला कई कई चीज बना सकता है)

178. य अरब दरब मा काम अई–

अर्थ – संग्रह करने की भावना।

179. केकरा के बच्चा माटिन खोदत है –

अर्थ – जन्मजात गुण का होना ।

180. जेखर बंदरवा ओहिन से नाचा थै।

अर्थ –जिसका बन्दर होता है, उसी से नाचता है। (जिसकी चीज होती है उसे चलाने की तरकीब वही जानता है)

181. कुछ तु समझे कुछ हम समझेन–

अर्थ – एक दूसरे की चालाकी समझना।

182. पानी कस पातर।

अर्थ –पानी तरह पतला होना। (पारदर्शी)

183. केला खात गाल फाटत है–

अर्थ – जादा रहीसी दिखाना।

184. तिलिन से तेल होथै।

अर्थ –तिल से ही तेल निकलता है। (कुछ बुनियादी गुण होना)

185. कहे के लाज न कहवाये के–

अर्थ – बेसर्म होना ं।

186. कीचड़ मां पाथर मारे से अपनेन उपर आवत है–

अर्थ– ना समझ व मूर्ख के मुह न लगाना चाहिए।

187. कर भला तो हो भला–

अर्थ – अच्छे कार्य अच्छा परिणाम।

188. आमा कस मीठ।

अर्थ –आम की तरह मीठा होना। (मृदुभाषी होना)

189. करनी करै तो क्यों डरै करि के क्यों पछिताय।
बोवै पेड बबूल का आम कहां ते खाय।।

190. काबुल गये मुगल बनि आये, बोलै अटपट वनी।
आव–आव कहि प्रान निकरिगें,धरा सिरहने पानी।।
का पराई नीकि सूखी का पराई जोय ।
आना काना रोटी पोव तुमाहि न पूछी कोय ।।

191. कमाई न धमाई घरौ के गमाई–

अर्थ – फायदा के बजाय घर की पूजी का डूबना।

192. बांस अस बढ़ जाब।

अर्थ –बांस की तरह लंबा हो तो जाना पर मोटा न होना। (एक तरफा विकास)

193. तेल अस चुपरब।

अर्थ –तेल की तरह चुपड़ देना। (खुशामद करना)

194. कसाइउ नोन पानी मानत है –

अर्थ – नमक क अहसान ।

195. केखर–केखर लेई नाव –कथरी ओढ़े सगला गावं–

अर्थ – सभी की स्थिति व द''ाा एक समान होना।

196. करियन बरदा जेठपूत – बड़े माग से होय सपूत–

अर्थ – काला बैल और जेश्ठ पुत्र भाग्य''ाली का सपूत होता है।

197. पाथर म दूब जमाउब।

अर्थ– पत्थर में भी दूब घास उगा लेना। (असम्भव को सम्भव बनाना)

198. कहे कहे पथरउ करमट लै लेत है–

अर्थ – निवेदन व प्ररेणा जड़ व निर्जीव पर भी पड़ जाता है।

199. खर कहवइया दाढ़ी जार –

अर्थ – सत्य कहने वाले की निन्दा की जाती है।

200. खाय त पछिताय, न खाय त पछिताय –

अर्थ – दुसन्धि में पड़ना– अनिर्णय की स्थिति।

201. टिटिहरी कस उतान।

अर्थ –आसमान गिरने की आशंका से ग्रसित टिटिहरी पक्षी अपने पैर को ऊपर करके अण्डे सेती है कि अगर आकासा गिरे तो वह अपने पंजे से रोक लेगी। (व्यर्थ ही आशंकित रहना)

202. खरी मजूरी चोखा काम–

अर्थ –अच्छा दाम देने पर अच्छा काम मिलता है।

203. खाय भतार केर गावै यार केर–

अर्थ – खाना कपड़ा पती का गुणगान यार दोस्तों का।

204. चिरई कस बसेर।

अर्थ –चिड़ियों की तरह बसेरा जैसा चिड़ियों का किसी एक पेड़ में स्थाई निवास नहीं होता।

(स्थायित्व न होना)

205. खोदा पहाड़ निकली चुहिया–

अर्थ –बहुत परिश्रम के बाद छोटा सा लाभ या प्रतिपल।

206. खोटा बेटा खोटा दाम, समय परे पर आवै काम–

अर्थ – बिगड़ पुत्र और अचल पैसा भी कभी काम आ जाता है।

207. कुइंया केर गूलर बनब।

अर्थ –कूप मण्डूक बनना। (सीमित दृष्टि)

208. खरामाल के सौ ग्राहक –

अर्थ – सच्चाई के सेकड़ों साथी ।

209. कंजरउ नोन पानी मागत है–

अर्थ – निर्दयी निर्मोही ब्यक्ति भी नमक क अहसान मानता है।

210. सौठे पीपर न खाय के एकठे ऊमर खाय लेय।

अर्थ –पीपल के छोटे छोटे बहुत से फल खाने के बजाय क्यों न ऊमर का एक ही फल खा लिया जाय। (फुटकर काम के बजाय बड़ा और थोक काम)

211. लेय अहार त पेलै पहार–

अर्थ– फुल मात्रा मे भोजन करने वाला अच्छा परिश्रम भी करता है।

212. खाईं खोदै और को, वाको कूप तैयार–

अर्थ – दूसरे के लिए गडढा खनने वाला स्वयं गिरता है।

213. जब पखियारी केर मऊत आबा थी, त पखना जमि आवाथे।

अर्थ –जब दीमक की मौत आती है, तब उसके पंख निकल आते हैं। (घमंड समूल नष्ट कर देता है)

214. खुदा मेहरवान त गदहा पहलवान–

अर्थ–भगवान कि कृपा हो जाय तो गिरा य कमजोर भी बहादुर हो जाता है।

215. खेत विगाड़ै पटवारी, अ बिटिया का महतारी–

अर्थ – पटवारी के चूक से जमीन और मां के छूट संतान हांथ से चली जाती है।

216. अरुआ कस हूंकी।

अर्थ –उल्लू की तरह घूं–घूं करना। (गंवारपन का प्रदर्शन)

217. खीर मां साझी महेरी म निनार–

अर्थ – सुख में साथी दुख में दूर।

218. घुइंस अस लहटब।

अर्थ –जंगली चूहों द्वारा अनाज उजाड़ देना। (गरीबी आ जाना)

219.खाये के गाल नहाये के बाल उपरै देखात हैं–

अर्थ – अपने ज्ञान व अनुभव से सब समझ लेना।

220. अरहर कस बहुरब।

अर्थ –बहुत दिनों बाद लौटकर आना जैसे अरहर नौ–दस माह बाद आती है।

221. गिरदान कस मूंड़ हलाउब।

अर्थ –गिरगिट की तरह सिर हिलाना। (आंख मूंदकर सारी बातें स्वीकार कर लेना)

222. खाय बोकरी अस, सूखै लकड़ी अस–

अर्थ – कितना भी खाय पर खाने का असर न होना।

223. गोलइंदा कस गाल देखाब।

अर्थ –महुए के फल की तरह गोल मटोल गाल दिखाना। (मोटा तगड़ा हो जाना)

224. खाय के पर रहु , मारि के टर रहु –

अर्थ – भोजन के बाद विश्राम व लड़ाई के बाद प्रस्थान जरूरी होता है।

भाग–2

I.C.H. के तहत

प्रान्तीय जागरुकता संस्थान,सतना (म0प्र0)

द्वारा संकलित

हमारे लोकगीत

क्रमांक 1 से 69 तक

(क्रमसः पृश्ठ क्रमांक 1 से 29 तक)

I.C.H./ भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और विविध सांस्कृतिक परम्पराओं का संरक्षण स्कीम 2014–15 के तहत

प्रान्तीय जागरुकता संस्थान,सतना (म0प्र0) द्वारा संकलित

विन्ध्यांचल (बघेलखण्ड) की बघेली–लोकगीत

प्रथम चरण में मनुश्य के जन्म से लेकर मृत्यु के पूर्व तक के हमारे विभिन्न सोलह संस्कार एवं मांगलिक अवसरो (जन्म, बधाई, मुण्डन, कर्णवेध,ब्रतवंध/जनेउ विवाह ,विदाई व पुजाई अनुश्ठान आदि) के पारंपरिक एवं ऋतु, पर्व, त्योहार व मौसमी लोकगीत जिनमे राग,सुर, लय व ताल के साथ जीवन के गहरे अर्थ भी समाहित होते हैं। यहां लोकगीतो की एक संमृद्ध व गौरव''ाली परंपरा है जो वि''व की श्रेश्ठतम् ,सार्वभौमिक एवं वैज्ञानिक भारतीय सुर सांस्कृतिक है, लोकगीत में खुसी और गम की सहज अभिब्यक्ति है, इन लोकगीतों में जीवन झलकता है उसमं कई तरह के अर्थ ,भाव व निस्कर्श निकालने की छमता होती है।इन लोकगीतों के बदौलत सामाजिक प्रथाएं व परंपरांए आज भी टिकी हैं। विभिन्न आयोजनों के माध्यम सें प्रस्तुत संग्रहित संकलन में स्वाभाविक क्षेत्र व अंचल की संस्कृति में कफी दूर–दूर तक समानता के बदौलत कई–कई गीत व कहावतें (सेम) एकदम मिलती–जुलती पाई गई हैं अतः उन्हे छटनी कर

मौलिक लोकगीतों का लेख संग्रह भेजा जा रहा है। **मांगलिक / संस्कार गीत माला**

मनुश्य के जन्म से लेकर मृत्यु के पूर्व तक के हमारे विभिन्न सोलह संस्कार एवं मांगलिक अवसरो पर गाए जानें वाले कमबद्ध गीत...............

1– सोहर गीत (बच्चा के पैदा होते समय का गीत)

धन्य धन्य नगर अयोध्या ,धन्य राजा द''ारथ

धन्य राजा द''ारथ हो...........। .धन्य धन्य नगर.........

अब धन्य हो कौ''ाल्या तुम्हारे भाग रमइया जहां जनमे,
रमइया जहॉ जनमे है हो....2 । .धन्य धन्य नगर.........
जउने दिन रामा जनम भे हैं , हाथि घोड़ा लुटीगे हैं–2
आवा हथियन के बल से करहुआ , रमइया द्वारा घूमय–2। धन्य धन्य नगर ....
जउने दिन रामा जनम भे हैं सोनमन जुटगे हैं, –2
आबा सोनमन के बल से बेसरिया रमइया नाके सा है–2 धन्य धन्य नगर ....
जउने दिन रामा जनम भे है, गउअन लुटि गे है–2
आवा गउअन के बल से बछवलना, रमइया दूध पीहै–2 हो.........धन्य धन्य नगर.......

2. – कुॅआ पूजन गीत

जल भरौं हिलोर हिलोर रे''ाम की डोरी–2
रे''ाम डोरी तबै निक लागै–2 जब पतली सो धनिया होय । रे''ाम की डोरी.........
पतली सी धनिया तबै निक लागै–2 जब सोने घइलना होय। रे''ाम की डोरी.........
सोने घइलना तब निक लागै–2 जब रूपे गोड़रिया होय। रे''ाम की डोरी.........
रूप गोड़रिया तब निक लागै–2 जब पतली से कमरिया होय। रे''ाम की डोरो.........
पतली कमरिया तब निक लगै–2 जब कोरा मॉ बालक होय। रे''ाम की डोरी.........
कोरा मा बालक तब निक लागै–2 जब काली झलरिया होय। रे''ाम की डोरी.........
काली झलरिया तब निक लागै–2 जब का''ाी मा मुण्डन होय। रे''ाम की डोरी.........
का''ाी मा मुण्डन तब निक लागै–2 जब फूफू झलरिया लेय। रे''ाम की डोरी.........

फूफू झलरिया तब निक लागै–2 जब लोई मा मोहर होय। रे''ाम की डोरी..... जल भरौं

3– जन्मदिन/मुण्डन/कन्छेदन

श्रीकृश्ण लिहिन अवतार सखी रे, मंमा के महलों मे –2
इन महलन मे सासू नहीं है –2
पिपरी कौन पिसाये, सखी रे मंमा के महलों मे.....। श्रीकृश्ण लिहिन.....
इन महलन मे जेठानी नहीं है –2
छठियॉ कौन धराये, सखी रे मंमा के महलों मे.....। श्रीकृश्ण लिहिन.....
इन महलन मे ननदी नहीं है –2
सोबरी कौन पुताबै, सखी रे मंमा के महलों मे.....। श्रीकृश्ण लिहिन.....
इन महलन मे देवरा नहीं है–2
बंसी कौन बजाये, सखी रे मंमा के महलों मे.....। श्रीकृश्ण लिहिन.....
श्रीकृश्ण लिहिन अवतार सखी रे, मंमा के महलों मे ।

4–ब्रतवंध गीत (जनेउ संस्कार हाते समय का गीत)

अरे अरे कातिक कुमार चैत कबै लगिहैं हो।
हो कबै आजा जइहैं बजरिया, कपड़ा लै अइहैं हो।
हो कबै आजी रंगिहै पियरिया बरन कब होइहैं हो। अरे अरे कातिक.....
हो कबै पापा जइहैं बजरिया, कपड़ा लै अइहैं हो।
हो कबै अम्मा रंगिहै पियरिया बरन कब होइहैं हो। अरे अरे कातिक.....
हो कबै चाचा जइहैं बजरिया, कपड़ा लै अइहैं हो।
हो कबै चाची रंगिहै पियरिया बरन कब होइहैं हो। अरे अरे कातिक.....
हो कबै भइआ जइहैं बजरिया, कपड़ा लै अइहैं हो।

हो कबै भाभी रंगिहै पियरिया बरन कब होइहैं हो। अरे अरे कातिक.....

5 – मंडप गीत (मंडप पडते समय का गीत)

चलो सखी देखन चलियो रे जहां मड़वा परत है
बढइया बेटउना तै मोरे भइया
अच्छे–अच्छे खम्भा ले अइयों रे
जहां मडवा परत है। चलो सखी.....

6 – तिलकोत्सव गीत (तिलक चढ़ते समय का गीत)

आयो तिलक अगरे से, बन्ना ससुरे से ,तिलक बड़ी थोड़ी है–2
बन्ना के आजा तिलक नहीं छोरै–2
तिलक नहीं ठेगैं, तिलक बडी़ थोडी़ है। आयो तिलक.....
बन्ना के पापा तिलक नहीं छोरै–2
तिलक नहीं ठेगैं, तिलक बडी़ थोडी़ है। आयो तिलक.....
बन्ना के फूफा तिलक नहीं छोरे–2
तिलक नहीं ठेगैं, तिलक बडी़ थोडी़ है। आयो तिलक.....

7 – बारात प्रस्थान गीत (बारात जाते समय का गीत)

बेटा बेग करो तैयार तुम्हे कोई सजन बुलावैं–2
अम्मा चलो हमारे साथ अकेले हम न जावै रे–2
बेटा बाबुल को ले लो सथ दुलन्हिया ब्याह ले आवा रे।।
चाची चलो हमारे साथ अकेले हम न जावै रे–2
बेटा चाचा को ले लो साथ दुलन्हिया ब्याह ले आवा रे।
बेटा बेग करो तैयार तुम्हे कोई सजन बुलावैं–2

8 – द्वार चार गीत (बारात बधू पक्ष के यंहा पहुचने समय का गीत)

मेरा हरियाला बन्ना मेरा सहजादा बन्ना

बन्नी के घर को आया–2

बेंदी भी लूट लिया, टीका भी लूट लिया

सारा धन लूट लिया–2

बन्नी के घर को आया –2 । मेरा हरि.....

कंगन भी लूट लिया, कुण्डल भी लूट लिया

सारा धन लूट लिया–2

बन्नी के घर को आया –2 । मेरा हरि.....

9 –बन्नी चढाव गीत (दुल्हन को मण्डप में लातें समय का गीत)

बराती फूल बरसाओं बन्नी मंडप पे आई है–2
बन्नी के माथ की बेंदी बन्नी सास ने भेजी–2
पहन लो प्यार से बन्नी तुम्हे ससुराल जाना है। बाराती.....
बन्नी के हाथ की चूडी बन्नी की सास ने भेजी–2
पहन लो प्यार से बन्नी तुम्हे ससुराल जाना है। बाराती.....
बन्नी के कान के कुंडल बन्नी की सास ने भेजा–2
पहन लो प्यार से बन्नी तुम्हे ससुराल जाना है। बाराती.....
बन्नी की गले की चैन बन्नी की सास ने भेजा–2
पहन लो प्यार से बन्नी तुम्हे ससुराल जाना है। बाराती.....

10 – जयमाल गीत (विवाह की र''म जयमाल पड़ते समय का गीत)

बन्नी–बन्ना

अंचला भीतर करलो जी लग जइहै नजरिया–2
ये बन्ना अपने आजा जी के प्यारे–2
आजी के ऑखो के तारे जी, लाग जइहै–.....
ये बन्ना अपने पापा जी के प्यारे–2
मम्मी के ऑखो के तारे जी, लाग. जइहै–.....

ये बन्ना अपने चाचा जी के प्यारे–2
चाची के ऑखो के तारे जी, लाग.. जइहै–.....

11 – चढ़ाव गीत (विवाह की र''म चढ़ाव चढ़ते समय का गीत)

आज श्री सीता जी का चढ़त चढ़ाव
हरे मण्डप के नीचे जी–2
धन्य सासु धन्य ससुरा ऐसी
बहु पायो हरे मण्डप के नीचे जी–2। आज श्री सीता.....

.

12 – विवाह गीत (विवाह र''म का गीत)

कोया लगाये है आमा रे जामुन हो, कोया लगाये लखराम
कोया लगाये है सुधर बजरिया , हो सेंदुरा तो मंहग बिकाय
बाबुल लगाये है आमा रे जामुन हो, पीतिया लगाये लखराम
भइया लगाये है सुधर बजरिया हो सेंदुरा मंहग बिकाय हो। कोया.....

13 – लावा परसाई गीत (विवाह की एक र''म लावा परसाई का गीत)

लावा परस भइया लावा त बहिनी तुम्हारी हो
एक पिपरी तोरी बहिनी, दूसर बहनोइया हो। लावा परस.....
एक पिपरी तोरी फूफू , दूसर फूफा हो। लावा परस.....
एक पिपरी चाची बहिनी, दूसर चाचा हो। लावा परस.....
एक पिपरी मौसी बहिनी, दूसर मौसा हो। लावा परस.....

14 – अंजुरी गीत (विवाह की एक र''म अंजुरी का गीत)

हॉथ मा सेधउरा लीन्हें, खाय बीरा पान हो कि–2
आ न जात्या मारी धना हमरेन साथ हो कि–2
कइसे के आई स्वामी, तुम्हरेन दे”ा हो कि–2
ठाढ़े देखय माया बाबुल नागरी के लोग हो कि। ठाढ़े देखय.....।हॉथ मा.....
कइसे के आई स्वामी तुम्हरेन दे”ा हो कि–2
ठाढ़े देखय चाचा चाची नगरी के लोग हो कि–2 ठाढ़े देखय.....।हॉथ मा.....
कइसे के आई स्वामी तुम्हरेन दे”ा हो कि–2
ठाढ़े देखय भइया भाभी नगरी के लोग हो कि–2 ठाढ़े देखय.....।हॉथ मा.....

15 – बनरा गीत (विवाह की एक र”म का गीत)

द्वारे डाल दो सतरंगिया, चौपड़ खेलै रे बनरा –2
चौपड़ खेलै रे बन्ना, चौपड़ खेले रे बनरा –2 ।
अपने आजा से बाजी लगामैं रे बनरा – 2
पड़गा दाव पलटगा पांसा बाजी जीतै रे बन्ना। द्वारे डाल दो.....
अपने बाबुल से बाजी लगामै रे बनरा –2
पड़गा दाव पलटगा पांसा बाजो जीतै रे बन्ना । द्वारे डाल दो.....
अपने चाचा से बाजी लगामैं रे बन्ना–2
पड़गा दाव पलटगा पांसा बाजी जीतै रे बन्ना । द्वारे डाल दो.....
अपने भइया से बाजी लगामै रे बन्ना–2
पड़गा दाव पलटगा पांसा बाजी जीतै रे बन्ना । द्वारे डाल दो.....
द्वारे डाल दो सतरंगिया चौपड़ खेलै रे बंना–2
चौपड़ खेलै रे बन्ना, चौपड़ खेले रे बन्ना।

16 – बेलनहाई गीत (विवाह की एक र”म का गीत)

ऐजी ऐसी प्यारी बहनी चिट्ठिया लिख भेजैं, चले आमैं भइया हमार–2
एजी कइसे के अउबैं बहनी तुम्हरे हम दे”ाय
पड़गे है उअत के घाम–2 । ऐ जी एसी.....
ऐजी दर्जी बुलाउबै छत्र तनउबै
चले आमै भइया हमार–2 । ऐ जी एसी.....
ऐजी कइसे के अउबै बिहनी तुम्हरे हम दे”ाय
पड़गे है नदिया औ नार। ऐजी एसी.....
ऐजी नदिया अ नार मा पुल बधबउबै
चले आमै भइया हमार–2। ऐजी एसी प्यारी.....

ऐ जी कइसे के अउबैं बहिनी तुम्हरे हम दे"ाय
मर जाबै भूख और प्यास–2। ऐजी एसी प्यारी.....
एजी गलियन गलियन जेवना बनबउबै ,गंगा जल की धार। ऐ जी एसी प्यारी.....
ऐजी ऐसी प्यारी बहनी चिट्ठिया लिख भेजैं, चले आमैं भइया हमार–2

17 – गारी गीत (विवाह मे बरातियों के भोजन करते समय का गीत)

राम जंगल में बागत है जाइके, कुटिया सूनी पाइन आइके –2
मृगा मार राज जब आये, कुटिया को सूनी जब पाये,
मन ही मन बहुत ही पछताये, सोच कीन्ही है मन में हर्शाये के,
कुटिया सूनी पाइन आइके। राम जंगल में..... (अंतरा–1)
पूछे राम वृक्ष से जाई, यहॉ को आई सीता माई,
हमको दइयो तनिक बताई वृक्ष न बोले न तनिकौ बताय के,
कुटिया सूनी पाइन आयके। राम जंगल में.....(अंतरा–2)
आयके राम ने ढूढ़त जायी, इतने मे मिल गये जटाऊ,
दीन्हीं सबला हाल बताई, रोकत मैं रथ को चोंच से लड़ाय के,
कुटिया सूनी पाइन आय के। राम जंगल में.....(अंतरा–3)
गिद्ध से पूरा पता बताई, राम ने उसकी कियों दवाई,
गिद्ध को सीधे बैकुण्ठ पठाई, कहो सब कोऊ राम राम आइके,
कुटिया सूनी पाइन आय के। राम जंगल में.....(अंतरा–4)

गारी गीत–2 (विवाह मे बरातियों के भोजन करते समय का गीत)

पांतिन पांनि परिगै पतरिया, बैठे लखन चारो भाई
काहे के पतरी काहेन के दोना काहे न डोभ डोभाई।
पान की पतरी छिउलन के दोना, लौंगन डोम डोभाई। पांतिन.....
काहे के रोटी काहेन के साग काहे न सोंध सोंधाई।
मैदा की रोटी गोभी के साग,घिव सुरहिन केर सोंधाई। पांतिन.....

18 – सोहाग गीत (विवाह अवसर का गीत)

अरे एतने जतन सेरे पाल्यौ रे चिरइया–2
पै उड़ गै विदे"िाया के दे"ा। रानी के सोहगवा।

अरे आजा उनके रोमय रूमाल मुख पोछय–2
पै आजी उनकी रोमय निरा धार। रानी.....
अरे चाचा उनके रोमय रूमाल मुख पोछय–2
पै चाची उनकी रोमय निरा धार। रानी.....
अरे भइआ उनके रोमय रूमाल मुख पोछय–2
पै भाभी उनकी रोमय निरा धार। रानी.....

19 – कलेवा गीत

(विवाह प''चात बरात विदाई के पूव वर का कलेवा/नास्ता अवसर का गीत)

दूल्हे कर लो कलेवा दिल खोल के , विनय करो हाथ जोड़ के ।
टी.व्ही. मागै टी.व्ही. नइया, मोटर मागै मोटर नइया
कार हमको देने नइया
लाला लैले साइकिलिया दिल खोल के, विनय करू हाथ जोड के। दूल्हे कर.....
कूलर. मागै कूलर नइया, पंखा मागै पंखा नइया
एसी हमको देने नइया
लाला लैले तू बेनमा दिल खोल के, विनय करू हाथ जोड के। दूल्हे कर.....

20 – बिदाई गीत (विवाह के बाद बारात व लड़की की विदाई अवसर का गीत)

द्वारे माही बाजा बाजै भितरे सहनाई हो कि–2
आज मण्डप सूना होइगा बेटी ब्याही दूरी हो कि–2
बाहिरे से आजा रोमय भीतरे से आजी हो कि–2
आज मण्डप सूना होइगा बेटी ब्याही दूसरी हो। द्वारे माही.....।
बाहिरे से पापा रोमय भीतरे से माइ हो कि–2
आज मण्डप सूना होइगा बेटी ब्याही दूसरी हो। द्वारे माही.....।

21 – परछन गीत (बारात वापस वर के घर आने पर परछन अवसर का गीत)

धीरे करो परछनिया, सिया राम लाये दुल्हनिया –2
पहली परछनिया उनकी आजी करत है –2। धीरे करो परछनिया.....
दूसरी परछनिया उनकी माया करत है –2। धीरे करो परछनिया.....
तिसरी परछनिया उनकी चाची करत हैं –2। धीरे करो परछनिया.....
चौथी परछनिया उनकी भौजी करत है –2। धीरे करो परछनिया.....
धीरे करो परछनिया, सिया राम लाय दुल्हनिया –2

22 – डोला मुदाई गीत (विवाह की एक र"म डोला मुदाई गीत का गीत)

लाला खोल दे केवडिया हो...मैं देखों तुम्हरी धना।
धौ सावल है धौ गोर.....मैं देखों तुम्हरी धना। लाला.....।
धौ पातर है धौ मोट.....मैं देखो तुम्हरी धना। लाला.....
धौ लम्बी है धौ छोट.....मैं देखो तुम्हरी धना। लाला.....
लाला खोल दे केवडिया हो...मैं देखों तुम्हरी धना।

23 – गैलहाई गीत (मंडप छूटने के बाद बहाने नदी जाते समय का गोत)

लक्षिमण लिए बाण रामा हिरनिया मारै–2
पहली हिरनिया बागा मा मारिन, बागा बिच मारिन
मालिन के ओटे, रामा हिरनिया मारै–2। लक्षिमन.....।
दुसरी हिरनिया कुअन बिच मारिन, कुअन बिच मारिन
कहरिन के ओटे, रामा हिरनिया मारै–2। लक्षिमन.....।
तिसरी हिरनिया महल बिच मारिन, महल बिच मारिन
रनियन के ओटे, रामा हिरनिया मारै–2। लक्षिमन.....।

24 – देवी पूजन गीत (नई बहू आने पर देवी की पुजाई समय का गीत)

मइया विनती करू मैं दोऊ कर जोड़े–2
मइया पहली अरज मोरी सुन लीजै–2 मइया विनती.....
मइया दूसरी अरज मोरी सुनली जै–2
मोरे पाव की पायल अमर कीजै–2.....मइया विनती.....
मइया तिसरी अरज मोरी सुनली जै–2
मोरे हाथ चूड़ी अमर कीजै–2 मइया विनती.....
मइया चौथी अरज मोरी सुनली जै–2
मोरे गले का हरवा़ अमर कीजै–2 मइया विनती.....

25 – होरी गीत (वैवाहिक अवसर पर गाया जाने वाला होरी गीत)

बिजनैया चमा चम लौगे जड़ी–2
ठंडा सा पानी गरम कर लायो,
तुम सफरो न राजा मै मायके चली। बिजनैया.....
सोने के थाली में जैमना परोस्यौं,
तुम ज्योमो न राजा मै मायके चली। बिजनैया.....

2– सिर बाधे मुकुट खेले होरी–2
पहली होरी गया मा खेलिन
गया गजाधर की है जोड़ी। सिर बाधे.....।
दुसरी होरी वृन्दवन मा खेलिन
राधा कि"ान की है जोड़ी। सिर बाधे.....।
तिसरी होरी अयोध्या मा खेलिन
रामा सिया की है जोड़ी। सिर बाधे.....।

26 – कजरी गीत (सावन महीने में गाया जाने वाला गीत)

हरि रामा बेला फुलै आधीरात

चमेली भिनसारे रे हारी–2
हरि रामा ठण्डा सा पानी गरम कर लायो रामा–2
हरि रामा ससुरा सफरैं आधीरात
सास भिनासारे रे हारी । हरि रामा.....।
हरिरामा सोने के लोटा गंगा जल पानी रामा –2
हरिरामा ससुरा घुटै आधीरात
सास भिनसारे रे हरि । हरि रामा.....।
हरि रामा रूचि रूचि के मैं तो जेमना बनायो रामा।
हरे रामा ससुरा जेमैं आधीरात, सास भिनसारे रे हरि। हरि.....

27 – हिंदुली गीत (सावन महीने में गाया जाने वाला गीत)

लगत अशढ़वा बोले रे पापी मोरिला पै
मोरो मन लागै नईहरवा हो ना–2
आजी मोरी होती खबर मोरी करती पै
आजा दिहिन बिसराई हो ना।
माया मोरी होती खबर मोरी करती पै
बाबू दिहिन बिसराई हो ना।
भइया मोरे होते खबर मोरी लेते पै
भाभी दिहिन बिसराई हो ना। लगत अशढवा.....।

आइये देखे–सुनें और पढें
–लिखे कुछ बेघंली के और भी लोकगीतो का संकलन

28 – <u>बन्ना गीत</u>

लै धनुश बन्ना ठाड़ोरी, कोई जोडी तो मिलाय दो–2
जोडी़ तो मिलाय दो, जोडी़ तो मिलाय दो,– लै धनुश.....
मॉथे बन्ना जी के मौरे भी सोहै–2
टिपकिन बिच सिया जानकी, कोई जोडी तो मिलाय दो,– लै धनुश.....
बन्ना जी के कानो मे कुंडल सोहे –2
झुमकिन बिच सिया जानकी , कोई जोडी़ तो मिलाय दो,– लै धनुश.....
अंग बन्ना जी के जामा सोहे –2

चुनरी के बिच सिया जानकी, कोई जोड़ी तो मिलाय दो,– लै धनुश.....
हाथ बन्ना जी के घड़िया सोहे–2
कंगन बिच सिया जानकी कोई जोडी़ तो मिलाय दो,– लै धनुश.....
लै धनुश बन्ना ठाड़ोरी, कोई जोडी तो मिलाय दो ।

29 – बधाई गीत

लालन के जनम दिन द"ाहरा मनाएगें–2
द"ाहरा मनाएगे दीवाली मनाएगें, रहे जिंदगानी तो होली मनाएगें।लालन के.....
लालन के जनम दिन मे ंसासू बुलाएगे–2
सासू बुलाएगे पिपरी पिसायेगें, रहे जिंदगानी तो अम्मा बुलायेगें। लालन के.....
लालन के जनम दिन में जेठी बुलाएगें–2
जेठी बुलायेगें लड्डु बधाएगें, रहे जिंदगानी तो चाची बुलायेगें। लालन के.....
लालन के जनम दिन मे ननदी बुलाएगें–2
ननदी बुलायेगे सोबरी पुतायेगें, रहे जिंदगानी तो बहना बुलायेगें। लालन के.....
.
लालन के जनम दिन में देवरा बुलायेगें–2
देवरा बुलायेगें बंसी बजवायेगें, रहे जिंदगानी तो भइया बुलायेंगें। लालन के.....
.
लालन के जनम दिन द"ाहरा मनाएगें।

30 – देवी गीत

देवी पूजन चली भर सॉस रसीली मालिनियॉ–2
रॉछड़ गेरूआ गंगा जल पानी–2
अरे कंचन थाली सजाय रसीली. मालिनियॉ । देवी पूजन चली.....
मेवा बतासा से भरगै डलिया–2
अरे रूचि–रूचि जेवना बनाय रसीली मालिनियॉ । देवी पूजन चली.....
देवी पूजन चली भर सॉस रसीली मालिनिया।

31 – सोहाग गीत

अरे इतने दिनन केरी पाली रे चिरइया –2
पैं ले गये बिदेशिया उड़ाय, रानी के सोहगवा–2
अरे आजा उनके रोमैं, रूमाल मुख पोछै–2
पै आजी उनकी रोमैं निराधार , रानी के..........................
अरे पापा उनके रोमैं रूमाल मुख पोछै–2
पै माया उनकी रोमैं निराधार ,रानी के...................
अरे चाचा उनके रोमैं रूमाल मुख पोछै–2
पै भाभी उनकी रोमैं निराधार, रानी के.....................
अरे इतने दिनन केरी पाली रे चिरइया –2
पैं ले गये बिदेशिया उड़ाय, रानी के सोहगवा।

32 – अंजुरी गीत

कोया गूथे मोती माला, कोया गूथे हार हो कि कोया गूथे हार हो की
कोया करे ढेंरिया के सोलह सिंगार हो । कोया गूथे मोती.......
माया गूथे मोती माला चाची गूथे हार हो कि–2
भाभी करै ढेरिया के सोलह सिंगार हो ।
कोया देखे मोति माला कोया देखै हार हो की–2
कोया देखे डेंरिया के सोलह सिंगार हो ।
सासू देखे मोति माला जेठी देखै हार हो कि–2
सइयां देखे डेरिया के सोलह सिंगार हो–2
कोया गूथे मोती माला................................

33 – बन्ना गीत

उनके लाला के लिये कलम मशियानी, बगल में किताब
ललन मोरे पढ़ने को जइहै रे, ललन मोरे पढने को जइहै रे–2
(1) उनकी मम्मी (माया) लिए कटोरन दूध
गलीन बिच ठाढ़ निहारे रे–। उनके लाला लिए ....
(2) उनकी चाची लिए कटोरन दूध

गलीन बिच ठाड़ निहारे रे। उनके लाला लिए .....
(3) उनकी आजी लिये कटोरन दूध
गलीन बिच ठाड़ निहारे रे। उनके लाला लिए .....
.उनके लाला के लिये कलम मि"ायानी, बगल में किताब
ललन मोरे पढ़ने को जइहै रे, ललन मोरे पढने को जइहै रे–2

34 – दादरा गीत (मुण्डन/कन्छेदन अवसर का)

हमसे जुलुम जेठानी करैं, बरजा राजा जेठ – 2
(1) आधी रात सासू पनिया को भेजैं–2
मटकी फोड जेठानी धरैं, बरजा राजा जेठ। हमसे जुलुम जेठानी करैं.....
(2) आधी रात सासू पीसबे को भेजै–2
मुठिया तोड़ जेठानी धरैं, बरजा राजा जेठ। हमसे जुलुम जेठानी करैं.....
(3) आधी रात सासू जेमना को भेजैं–2
बटुआ तोड़ जेठानी धरैं, बरजा राजा जेठ। हमसे जुलुम जेठानी करैं.....
हमसे जुलुम जेठानी करैं, बरजा राजा जेठ–2

35 – दादरा गीत

रात काहे रोये रे ललन तैं, बिहाने घुनघुनमा मागउवै–2
(1) ससुरे मे होती तो सासू से कहती –2
अम्मा से, अम्मा से कहत लजान्यौं, बिहाने .....रात काहे.....
(2) ससुरे मा होती तो जेठानी से कहती –2
चाची से, चाची से कहत लजान्यौं, बिहाने .....रात काहे.....
(3) ससुरे मा होती तो देवरानी से कहती –2

भाभी से, भाभी से कहत लजान्यौं, बिहाने .....रात काहे.....
(4) ससुरे मा होती तो ननदी से कहती –2
बहना से , बहना से कहत लजान्यौं, बिहाने .....रात काहे.....
रात काहे रोये रे ललन तैं, बिहाने घुनघुनमा मागउवै–2

36 – सोहाग गीत

अरे हली भाली डोलिया, सजाया मोरे बाबुल–2
पै चले जाब ससुरू के दे"ा, रानी के सोहगवा–2
अरे ससुरू के दे"ा न जया मोरी बेटी –2
पै मर जइहा भूखी या पियास, रानी के सोहगवां .....
अरे भूॅख सहि लेबै पियास सहि लेबै
पै सहबै न आजी जी के बोल, रानी के.....
अरे ससुरू के दे"ा न जया मोरी बेटी –2
पै मर जइहा भूखी या पियास, रानी के सोहगवां .....
अरे भूॅख सहि लेबै पियास सहि लेबै
पै सहबै न माया जी के बोल, रानी के.....। अरे हलि भली डोलिया.....।

37 – गारी गीत

बखरी तो भली बनवाया जनक जी, खिडकी लगवाया फुलवारी की हाजी,
आये सजन चारो भइय बराती दमक
रहे मुस्काइ की हाजी हो। बखरी तो भली.....
पैर धोबाबन का कोपरी मंगाई ,जल तो मंगाई
गंगाजल की हाजी हो। बखरी तो भली.....
पातन पातन परगै पतरिया निरखै सीतल
सुकुमारी की हाजी हो। बखरी तो भली.....

बखरी तो भली बनवाया जनक जी, खिडकी लगवाया फुलवारी की हाजी,

38 – दादरा गीत (नचनहाई– मांगलिक अवसर पर महिलाओं के नृत्य का गीत)

कउनौ बरन के गजरा हो मोहि नीक न लागैं–2
मइके के नीक लागै बाग बगइचा –2
ससुरे के फूली फुलवरिया हो मोही नीक न लागे–2
कउनौ बरन.....
मइके के नीक लागै घर खपरैला–2
ससुरे के रंगीली महलिया हो मोही नीक न लागे।–2 कउनौ बरन के .....
मइके के नीक लागे अम्मा और बहना–2
ससुरे के सासु ननदिया हो मोही नीक न लागे। कउनौ बरन के .....
कउनौ बरन के गजरा हो मोहि नीक न लागैं।

39 – दादरा हास्य गीत

दिये गोल टोपी नजर मारे अपना–2
पनिया भरन गई संग गये अपना–2
फूट गई गागर फिसल गये अपना। दिये गोल टोपी.....
रोटिया बनाने गई संग गये अपना–2
फूल गई रोटी पिचक गये अपना। दिये गोल टोपी.....
सेजा सोबन गई संग गये अपना–2
खिसक गया सेजा उलट गये अपना–2 दिये गोल टोपी.....
दिये गोल टोपी नजर मारे अपना–2

40 – अंजुरी गीत

कोया गूथे मोती माला, कोया गूथे हार हो कि कोया गूथे हार हो की
कोया करे ढेंरिया के सोलह सिंगार हो
माया गूथे मोती माला चाची गूथे हार हो कि–2
भाभी करै ढेरिया के सोलह सिंगार हो
कोया देखे मोति माला कोया देखै हार हो की–2
कोया देखे ढेंरिया के सोलह सिंगार हो

सासू देखे मोति माला जेठी देखै हार हो कि–2
सइया देखे डेरिया के सोलह सिंगार हो–2
कोया गूथे मोती माला.....

41 –बेलनहाई गीत

उअत के सुरज बहुत निक लागै अथवत छायी ललाई जी–2
बेटी का जनम बहुत निक लागैं, धन सम्पत्ति घर होई जी। उअत के सुरज.....
माया कहै बेटी नेरे बियहबैं, बाबुल काहे कुछ दूरो जी–2
भइया कहै बहिनी गंगा बियहबैं, भौजी न बोलय मुख बोल जी। उअत के सुरज.....
माया कहै बेटी जल्दी बुलउबै बाबुल कहै कुछ देरी जी–2। उअत के सुरज.....
उअत के सुरज बहुत निक लागै अथवत छायी ललाई जी–2

42 – बेलनहाई गीत

निहुर के गोरिया अंगना बटोरय
जोगिया ठार दुआर मोरे लाल –2
जोगिया–जोगिया न करा सजनी, लागौ मैं सजना तुम्हार मोरे लाल
जो तुम जोगिया मोरे सजवा लगत हो
सासू का तीरथ कराना मोरे लाल । निहुर के .....
जो तुम जोगिया मोरे सजना लगत हो
जेठी अलग करावा मोरे लाल । निहुर के.....
जो तुम जोगिया मोरे सजना लगत हो
ननदी को गमना करावा मोरे लाल। निहुर के गोरिया.....

43 – दादरा गीत

मोरे सइयॉ के महलिया लगे रे फुलवा –2
हमरे ससुर जी के तीन है लडिका –2
हॉ–हॉ ओतन्यों सुन्दर, गुइया ओतन्यों मा सुन्दर हमार बलमा–2 मोरे सइया .....
हमरे ससुर जी के तीन महलिया–2
हॉ–हॉ ओतन्यो मा सुन्दर ,गुइया ओतन्यो मा सुन्दर हमार महला–2 मोरे सइया .....

हमरे ससुर जी के तीन हैं नतियॉ–2
हॉ–हॉ ओतन्यों मा सुन्दर, गइया ओतन्यों मा सुन्दर हमार ललना–2 मोरे सइया .....
मोरे सइयॉ के महलिया लगे रे फुलवा–2

44 –बेलनहाई गीत

रामलखन तपसी दोनो भइया, साधू बने चले जाय मोरे लाल –2
चलते–चलते बागा मा पहुॅचे, मालिन उठी घबराय मोरे लाल ।
ठहरो–ठहरो ओ साधू भइया, गजरा गुहाय लिये जाव मोरे लाल। रामलखन तपसी....
तोर गुहा गजरा न लेबै मालिन, साधू धरम घट जाये मोरे लाल। रामलखन तपसी.....
.
चलते चलते ताला मा पहुॅचे, धोबिन उठी घबराय मोरे लाल।
ठहरो ठहरो ओ साधू भइया, कप ड़ा धुलाय लिये जाओ मोरे लाल। रामलखन तपसी.....
...
तोर धुबा कपड़ा न पहिनब धोबिनिया, साधू धरम घट जाय मोरे लाल।रामलखन तपसी..
चलते चलते कुअना मा पहुॅचे कहरिन उठी घबराय मोरे लाल।
ठहरो–ठहरो ओ साधू भइया, पनिया भराय लियो जाओ मोरे लाल। रामलखन तपसी....
तोर भरा पनिया न पोबै कहरिन, साधू धरम घट जाय मोरे लाल। रामलखन तपसी....
रामलखन तपसी दोनो भइया साधू बने चले जाय मोरे लाल ।

45 – दादरा गीत

घनी अमरइया कोयल कहॉ बोलय रे–2
सासू मागे लहगा ननद मागे चुनरी–2
सइयां मागे पागा रंगाय कहां पाऊ रे । घनी अमरइया.....
सास मागे कंगना ननद मागे चूड़ी–2
सइया मागे मुदरी गढाय कहॉ पाऊ रे । घनी अमरइया.....

सास मागे लौग ननद मागे लइची–2
साइया मागे बीरा रचाय कहॉ पाऊ रे। घनी अमरइया.....
सास मागे लड्डू ननद मागे पेंड़ा–2
सइया मागे बरफी जमाय कहॉ पाऊ र। घनी अमरइया.....

46 – बेलनहाई गीत

फर गई अमिया लचक गई डलियॉ, को तोड़ै को खाय मोरे लाल ।
जो घर होते ननद के बिरना, वो तोड़त हम खाब मोरे लाल। फर गई अमिया.....
चार महीना बरसा ऋतु आई, को देय छानी छबाये मोरे लाल। फर गई अमिया.....
जो घर होते ननदी के बिरना, छानी देते छबाये मोरे लाल। फर गई अमिया.....
चार महीना गरमी ऋतु आई, को देय बिजनिया डोलाये मोरे लाल। फर गई अमिया.....
जो घर होते ननद के बिरना, देते बिजनिया डोलाय मोरे लाल। फर गई अमिया.....
फर गई अमिया लचक गई डलियॉ, को तोड़ै को खाय मोरे लाल।

47 – दादरा गीत

खपरइले के बिरले बॉस शयन पर बूंदा चुऐ – 2
ससुरा जो हाते ता धन के छबउते –2
ससुइया के कौन वि”वास, शयन पर बूंदा चुऐ – खपरइले के बिरले.....
जेठा जो होते ता धन के छबउते–2
जेठनिया के कउन वि”वास, भायन पर बूंदा चुए – खपरइले के बिरले.....
देवरा जो होते ता धन के छबउते–2
देवरनिया के कउन वि”वास, भायन पर बूंदा चुए – खपरइले के बिरले.....
ननदोइया जो होते ता धन के छबउते–2
ननदिया का कौन वि”वास, भायन पर बूंदा चुऐ – खपरइले के बिरले.....
खपरइले के बिरले बॉस शयन पर बूंदा चुऐ ।

48 – गारी गीत

बखरी तो भली बनवाया हो जनक जी, खिड़की लगवाया फुलवारी जी–2
आये सजन चारो भइया बराती, दमक रहे मुस्काई जी। बखरी तो भली.....
गोड़ धोबन का कोपरी मगाइन, जल तो मगाइन गंगा जल जी। बखरी तो भली.....

पांतिन–पांतिन पड़गै पतरिया, निरखै सीतल सुकुमारी जी। बखरी तो भली.....
एक–एक सखियॉ गारी सुनामैं , खात रहै मुस्काई जी। बखरी तो भली.....
बखरी तो भली बनवाया हो जनक जी, खिड़की लगवाया फुलवारी जी ।

49 – बेलनहाई गीत

आये मेहमान हमे अच्छे लगत हैं, काहै की सब्जी बनाऊ मोरे लाल – 2
कटहर बनाऊ मोहे अटहर लगत है, काहे की सब्जी बनाऊ मोरे लाल। आये मेहमान.....
आलू बनाऊ मोहे भालू लगत है, काहे की सब्जी बनाऊ मोरे लाल। आये मेहमान.....
करइला बनाऊ मोहि करूआ लगत है, काहे की सब्जी बनाऊ मोरे लाल। आये मेहमान..
परवर बनाऊ मोहि करवर लगत है, काहे की सब्जी बनाऊ मोरे लाल। आये मेहमान.....
आये मेहमान हमे अच्छे लगत हैं, काहै की सब्जी बनाऊ मोरे लाल

50 – बेलनहाई गीत

एजी हमरे ससुर जी के बाग बगइचा, फूल फुलै झर जाय –2
एजी कोया गलामै बेला रे चमेली, कोया लगामै अनार।
एजी कोया लगामै अंतर के बिरवा, बगिया महक रहि जाय। एजी हमरे ससुर.....
एजी रामा लगामै बेला रे चमेली, लक्ष्मण लगामैं अनार।
एजी सीता लगामै अंतर के बिरवा, बगिया महक रहि जाय। एजी हमरे ससुर.....
एजी काहे से सींचैं बेला रे चमेली, काहे से सीचैं अनार।
एजी काहे से सीचैं अंतर के बिरवा, बगिया महक रहि जाय। एजी हमरे ससुर.....
एजी गगरी से सीचैं बेला रे चमेली, लोटा से सीचैं अनार।
एजी सोने घइलना से अंतर के बिरवा, बगिया महक रहि जाय। एजी हमरे ससुर.....

51 – कजरी गीत

सखियॉ समझ के डालै जै माला, राम जी की समली सुरतियॉ ना ।
सोने के थाली में जेमना परोसैव
सीता समझ के जेमना जेवामय । राम जी की.....

सोने के लोटा गंगा जल पानी
सीता समझ के जलवा घुटामैं । राज जी की.....
लौग सुपाड़ी का बीरा लगायव
सीता समझ के बिरिया रचामैं। राम जी की.....
सखियां समझ के डालै जै माला, राम जी की समली सुरतिया ना

52 – दादरा गीत

हमरे हुये नन्दलाल हो, चली आना ननदिया –2
काठे का पलना न लाना ननदिया –2
चंदन के हमरे रिवाज हो, चली आना ननदिया। हमरे हुये नन्दलाल.....
लड़का बच्चा न लाला ननदिया –2
हमरे है गोदी मा लाल हो, चली आना ननदिया। हमरे हुये नन्दलाल.....
हमसे नेगा न माग्या ननदिया –2
हम तुमका झूमका देब हो , चली आना ननदिया। हमरे हुये नन्दलाल.....
हमरे हुये नन्दलाल हो चली आना ननदिया।

53 – दादरा गीत

रामा के बारी उमरिया हो, विकट बन कइसे के रहिहैं–2
जो मै जनत्यों रामा वन जइहै –2
वन ही मा बागा लगउत्यों। विकट बन कइसे.....। रामा के बारी.....
जो मै जनत्यों रामा वन जइहैं –2

वन ही मै कुटिया बनउत्यों। विकट बन कइसे.....। रामा के बारी.....
जो मै जनत्यों रामा वन जइहैं –2
वन ही मै ताला खोदउत्यों। विकट बन कइसे.....। रामा के बारी.....
जो मै जनत्यों रामा वन जइहैं –2
वन ही मा कुअना खोदउत्यों। विकट बन कइसे.....। रामा के बारी.....
जो मै जनत्यों रामा वन जइहैं –2
वन ही मा भक्ति रमाउत्यों। विकट बन कइसे.....। रामा के बारी.....
रामा के बारी उमरिया हो, विकट बन कइसे के रहिहैं।

54 – दादरा गीत

वन बोलय मुरइली राम निदिया न लागै रे –2
रह रह मुरइली मै तोहि बतइहौं, बतइहौं ससुर जी से आज। निदिया न.....
रह रह मुरइली मै तोहि बतइहौं, बतइहौं जेठ जी से आज। निदिया न.....
रह रह मुरइली मै तोहि बतइहौं, बतइहौं देवर जी से आज। निदिया न.....
रह रह मुरइली मै तोहि बतइहौं, बतइहौं सइयां जी से आज। निदिया न.....
वन बोलय मुरइली राम निदिया न लागै रे ।

55 – दादरा गीत

धीर धरो सवर करो राजा, मोरी बाजे पयलिया –2
सास मोरी घर मा ससुर मोरे घर मां–2
ससुरा की लाज राखो राजा। मोरी बाजे पयलिया.....। धीर धरो .....

जेठानी मोरी घर मा जेठ मोरे घर मां–2
जेठा की लाज राखो राजा। मोरी बाजे पयलिया.....। धीर धरो .....
देवरानी मोरी घर मा देवर मोरे घर मां–2
देवरा की लाज राखो राजा। मोरी बाजे पयलिया.....। धीर धरो .....
धीर धरो सवर करो राजा, मोरी बाजे पयलिया ं।

56 – कजरी गीत

सखियॉ चला चली दर्शन का बृज मा झूल रहे नंदलाल ।
कोया झूलै कोया झुलामे–2
कोया खींचै डोर रामा – 2 ं। सखियॉ.....
रामा झूलै लक्ष्मण झुलामैं – 2
हनुमत खींचै डोर रामा – 2 । सखियॉ चला.....
ब्रम्हा झूलै विष्णु झुलामैं – 2
शंकर खींचै डोर रामा – 2 । सखियॉ चला.....
राधा झूलै रूकमिन झुलामैं – 2
ललिता खीचै डोर रामा – 2 ं। सखियॉ चला.....

57 – गैलहाई गीत

गेंदा का फूल कहां पाऊॅ हो, राजा मोरे गेंदा का बिरझै –2
वह फूल फूलै मोरे ससुरा जी के बगिया –2
सासरानी टोरन न देय हो, राजा मोरे.....। गेंदा का फूल.....
वह फूल फूलै मोरे जेठानी जी की बगिया–2

जेठानी टोरन न देय हो, राजा मोरे.....। गेंदा का फूल.....
वह फूल फूलै मोरे देवरा जी की बगिया–2
देवरानी टोरन न देय हो, राजा मोरे.....। गेंदा का फूल.....
गेंदा का फूल कहां पाऊॅ हो, राजा मोरे गेंदा का बिरझै ।

58 – दादरा गीत

कट कट भीष गिरै धरनी मा, भुजा गिरै मोरे आंगन मॉ –
विधवा हो गई बचपन मॉ। –2
आग लगै तोरे बागा बगइचा, आग लगै राजधानी मॉ। विधवा हो गई.....
आग लगै तोरे महल अटरिया, आग लगै राजधानी मॉ। विधवा हो गई.....
आग लगै तोरे कुइयॉ बउलिया, आग लगै राजधानी मॉ। विधवा हो गई.....
कट कट भीष गिरै धरनी मा, भुजा गिरै मोरे आंगन मॉ –
विधवा हो गई बचपन मॉ।

59 – सोहर गीत

वृन्दा रे वन के रहइया चंदन वन जइहा, चंदन वन जइहा हो–
अब लाय लालि पलगरया, ललन पहुडउबै ललन पहुडउबै हो। वृन्दा रे वन.....
केही चाही लाली पलगरिया, केही रे दोनो मोरिला हो –
अब केही चाही सोना परेउना, केही रे कठपुतली हो– 2। वृन्दा रे वन.....
ललना का लली पलगरिया , राजन दोनो मुरिला हो –2

अब देवरा का सोने परेउना , ननद कठपुतली हो –2। वृन्दा रे वन.....
डोलै लागी लाली पलगरिया, बोलय रे दोनो मुरिला हो –2
अब पढ़ै लागे सोने के परेउना, नाचे रे कठपुतली हो –2। वृन्दा रे वन.....
वृन्दा रे वन के रहइया चंदन वन जइहा, चंदन वन जइहा हो ।

60 – भोले बाबा गीत

भोलन तुम्हरे लम्बे दे"ावा हो,
अरे लम्बे दे"ावा हो मोरी फेंकी नजर नहीं जाय हो। भोलन तुम्हरे.....
पवनसुत धीरे बहे हो,
अरे धीरे बहे हो, मोरे यात्री का निबल शरीर हो। । पवनसुत..... भोलन तुम्हरे.....
पहड़िया मा रामा लड़े हो,
अरे रामा लड़े हो, और लंका मा लड़े हनुमान हो। पहड़िया मा ..... भोलन तुम्हरे.....
.....
भरत जी से जातै कहे हो,
अरे जातै कहे हो,मोर लक्षिमण के लगी भाक्तिबाण हो। भरत जी से.....भोलन तुम्हरे...
.....

61 –कुँआ पूजन गीत

ऊपर बदर घुमडाय हो, नीचे गोरी पनिया का निकली–2
जाई कहे मोरे राजा ससुर से,
अंगने मा कुंइया खोदाये हो। ऊपर बदर घुमडाय.....
जाई कहे मोरे राजा जेठ से,

अंगने मा कुंइया खोदाये हो। ऊपर बदर घुमडाय.....
जाई कहे मोरे देवर जी से,
अंगने मा कुंइया खोदाये हो। ऊपर बदर घुमडाय.....
ऊपर बदर घुमडाय हो, नीचे गोरी पनिया का निकली

62 – सोहर गीत

कहना उपजी हैं बेलिया त कहना चमेलिया, त कहना चमेलिया हो आवे
कहना उपजी झलरिया, झलर बड़ी सुन्दर, झलर बड़ी सुन्दर हो.....। 2
बागा मॉ उपजी है बेलिया त अॅगने चमेलिया त अॅगने चमेलिया हो आवे
अंचला मॉ उपजी झलरिया झलर बड़ी सुन्दर, झलर बड़ी सुन्दर हो.....। कहना उपजी...
काहे मॅा सीचौं मै बेलिया त काहेन चमेलिया त काहेन चमेलिया हो आवे
काहे मॉ सीचौं झलरिया, झलर बड़ी सुन्दर, झलर बड़ी सुन्दर हो.....। कहना उपजी...
दुधवा मॉ सीचौं मै बेलिया त दहिया चमेलिया ता दहिया चमेलिया हो आवे
तेलवा से सीचौं झलरिया झलर बड़ी सुन्दर, झलर बड़ी सुन्दर हो.....। कहना उपजी...
काहे मा तोड़ौ बेलिया त काहे मॉ चमेलिया काहे चेमलिया हो आवे
कहो मां लेव झलरिया झलर बड़ी सुन्दर, झलर बड़ी सुन्दर हो.....। कहना उपजी...
.टुकनी मा तोडौ मै बेलिया ता अॅचला चमेलिया ता अॅचला चेमलिया हो आवे
लोई मा लेव झलरिया झलर बड़ी सुन्दर, झलर बड़ी सुन्दर हो..... । कहना उपजी....
कहना उपजी हैं बेलिया त कहना चमेलिया, त कहना चमेलिया हो आवे
कहना उपजी झलरिया, झलर बड़ी सुन्दर, झलर बड़ी सुन्दर हो.....।

63 – कजरी गीत

चला सखी झूलन केरि भई बेरिया, मधुवन बोलन लागे मोर
कौन काठ का बना हिंडोलना–2
काहेन लागी डोर रामा । चला.....
चंदन काठ का बना हिंडोलना–2
रे''ाम लागी डोर रामा। चला सखी.....
कोया झूलै कोया झुलामैं–2

कोया खींचै डोर रामा । चला सखी.....
राधा झूलै कृश्ण (’’याम) झुलामैं–2
सखियॉ खींचै डोर रामा। चला सखी.....

64 – कुऑ पूजन गीत

जल कैसे भरौं जमुना गहरी, जमुना गहरी–2
ठाढ़े भरौं चूनर सरकत है–2
निहुरे भरौ भीगे चुनरी – भीगे चुनरी। जल कैस भरौं.....
धीरे चलौं घर बालक रोबै–2
तेज चलौं छलकै गगरी – छलकै गगरी। जल कैस भरौं.....
जल कैसे भरौं जमुना गहरी, जमुना गहरी।

65 –भगत गीत

बेर बेर बरजौं तोही रे मलिनिया,
गली बिच गमला न बोए होमा। मइया गली बिच गमला न बोए होमा। –2
अउती होइहै भाारदा माता–2 गमला गरज उड़ जाय होमा। बेर बेर.....
अउती होइहै काली माता–2 गमला गरज उड़ जाय होमा। बेर बेर.....
अउती होइहै दुर्गा माता–2 गमला गरज उड़ जाय होमा। बेर बेर.....

66 – दादरा गीत

कान्हा मटकी न फोड़ो डगरियन में – 2
जो कान्हा तुम्हें भूख लगी हो–2
कान्हा जेवना रखो है रसोइयन मे। कान्हा मटकी न.....
जो कान्हा तुम्हें प्यास लगी हो–2
कान्हा जलवा रखो है गगरियन मा। कान्हा मटकी न.....

जो कान्हा तुम्हे बंसी बजानी हो–2
कान्हा मुरली रखी है तोरे कमरिया मे–2। कान्हा मटकी न...

67 –सोहाग गीत

अरे सीता बियाहन चले राजा द''ारथ–2
पै चली आमै गंगे की धार रानी के सोहगवा –2
अरे राजा द''ारथ जैसे ससुरा मं पायौं–2।
और पायौं कौ''ाल्या जैसी सास रानी के सोहगवा। अरे सीता.....
अरे लक्षिमण भइया जइसन देवरा मै पायौं–2
पय वर पायौं भगवान रानी के सोहगवा। अरे सीता.....
अरे एक हाथे लोटा दूसर हाथे गजरा–2
पै चली आमै देवी हमार रानी के सोहगवा। अरे सीता.....
अरे नगर आयोध्या एक राज्य मैं पायौं–2
अरे अचल रहे अहिबात रानी के सोहगवा। अरे सीता..... अरे सीता बियाहन ।

68 –बेलनहाई गीत

ऐजी सीता बियाहन चले राजा द''ारथ धरती का लागे है उमंग–2
ऐजी माया मोरी दिहिन है नौमन सोनमा, बाबुल मोरे लहर पटोर। ऐजी सीता.....
ऐजी भइया मोरे दिहिन है सुरंग चुनरिया, भौजी सेंदुर भरी मांग। ऐजी सीता.....
ऐजी माया केरे सोनमा नौ दिन पहिरयन, फटगै लहर पटोर । ऐजी सीता.....

ऐजी भइया चुनरिया छिनर छुन जइहै रह गई सेंदुर भरी मॉग। ऐजी सीता.....
ऐजी माया मोरी रोमैं अलियन गलियन, पापा मोरे रोमै दरबार। ऐजी सीता.....
ऐजी भइया मोरे रोमैं डोलिया के आस–पास, कहा चली बहिनी हमार। ऐजी सीता.....
ऐजी सीता बियाहन चले राजा द''ारथ, धरती का लगी है उमंग। ऐजी सीता.....
ऐजी सीता बियाहन चले राजा द''ारथ धरती का लागे है उमंग–2

69 –सोहर गीत

आधे तलवा मा नाग ता आधे मा नागिन ता आधे मा नागिन हो आबा
आधा तलाब मोरा सूना ता एक कमल बिना, एक कमल बिना हो.....। आबा.....
आधे ओसरिया मा गोपी बइठे आधे मा गोपिया ता आधे मा गोपिया हो आबा।
आधी ओसरिया मोरी सूनी ता एक ननद बिना एक ननद बिना हो.....। आबा.....
जो सुन पाइन बिरना ता मिचिक दिहिन बटुवा मिचिक दिहिन बटुवा हो आबा।
उगिल दिहिन पान ता पान का बीरा, ता पान का बोरा हो .....। आबा.....
घोड़े पीठ भये है सवार चले बहिनी लेबामैं ता बाहिनी लेबामै हो .....। आबा.....
आधे तलवा मा नाग ता आधे मा नागिन ता आधे मा नागिन हो आबा।

Objectives of the Research :-

1. सर्वप्रथम मं बघेलखंड के सभी लोक गीतो और लोक नृत्यो की सूची बनाकर जानकारी एकत्र करूंगी ।
2. लोक गीतो के संचय धुन और बोल का संकलन करने हेतु बघेलखंड के हजारो छोटे - छोटे गावो की महिलाओ से मिलकर सभी गीतो का आडियो बनवाउगी ।
3. लोक नृत्यो के उस्तादो से मिलकर उनकी विषय वस्तु एकत्र कर एक कार्यशाला आयोजित करूंगी ।
4. लोक नृत्य एवं लोक गीतों के निः शुल्क प्रशिक्षण बावत विशेष कक्षाओ का आयोजन करूंगी ।
5. जिन लोगो ने किन्ही कारण वश इन कलाओ को छोड दिया है उन्हे ढूंढकर मंच एवं अवसर प्रदान करूंगी । मेरी कोशिश होगी की वृद्धा अवस्था की कगार पर पहुँचे कलाकारो का सम्बल बढा कर उन्हे आगे लाकर युवा कलाकारो को नई उर्जा के साथ सम्मिलित कर अवसर संजोने का उदेश्य पूर्ण कर सकूँ।
6. प्रशिक्षण शिविर को आयोजित कर मै लोक नृत्यो के सभी उस्तादो को एकत्र कर विलुप्त होती इस कला का वितरण युवाओ के मध्य करना चाहूँगी ताकि ये सांस्कृतिक धरोहर अनवरित बढती जाए ।

7. प्रशिक्षण शिविर में जितने प्रतिभागी भाग लेगे उनके प्रोत्साहन बावत स्थानीय , जिला , प्रदेश एवं राष्ट्रीय स्तर तक की सहायता के साथ उनकी प्रस्तुति को साकार बनाने हेतु मंचीय प्रस्तुतियो का आयोजनकरूंगी।

8. इन कलाओ के संरक्षण की दृष्टि से मै प्रति वर्ष उत्सव का आयोजन करने का प्रयत्न करूंगी जिसमें बघेली गीतो और बघेली नृत्यो की प्रस्तुतियाँ होती रहेगी।

Implementation of the Project

" बघेलखंड के विलुप्त होते सामाजिक एवं पारंपरिक लोकगीत और लोकनृत्य"

बघेलखंड के लोकगीत और लोक नृत्य देखने , सुनने , समझने ओर आस्वाद में सहज , सरल, तरल और सुवाच्य है। बघेलीलोक गीत लोक मानस का उनमुक्त राग है और लोकनृत्य सामाजिक संस्कारों , परंपराओं का मन प्राण है । समय की आधुनिकता और जीवन की आपाधापी में ये लोक धरोहर विलुप्त होती जा रही है जिसके संरक्षण बावत मेरा छोटा सा प्रयास अग्रेसित है । लोकगीत लोकगायको के हृदय से उपजते है और श्रोताओं के हृदय में अनायास ही प्रवेश कर जाते है । लोक जीवन की आदिम तथा गतिमान अभिव्यक्ति लोक गीतों मे ही प्रवाहित होती है । अपनी सहज बनावट बुनावट के आधार पर बघेली लोकगीत कलात्मक गीत से पृथक माने गयें है । कलात्मक गीत का वेग शिथिल होता है । लोकगीत का अनगढ रूप , मन , चित्त, बुद्धि और बोली बानी के योग से ढलता है । लोकगीत भावप्रदान और प्रबल प्रवेग वाले होते है लोकगीतों के निश्चित लोकतत्व होते है जो उन्हे सम्प्रभुता प्रदान करते हे। बघेली लोकनृत्य बघेली मानस के मनोरजन का प्रमुख माध्यम रहा है । यूँ तो बघेलखंड में लोकनृत्यो का स्वतंत्र अस्तित्व नही रहा किन्तु स्त्रियों और पुरूषों के बीच गाये जाने वाले गीतो दादरो को नचनहाई की श्रेणी मे रखा गया है और लोकनृत्यो का संचार होने लगा।

Brief Introduction of the Project

"बघेलखंड के विलुप्त होते सामाजिक एवं पारंपरिक लोक गीत और लोक नृत्य"

बघेलखंड के लोक गीत और लोक नृत्य अति प्राचीन , विकसित और समृद्ध रहे है । कुछ वर्षो पहले तक बघेलखंड के लोक गीतो की विपुल संपदा भरी पडी थी किन्तु, अब आधुनिकता और जीवन यापन की कठिन परिस्थिति में व्यक्ति इन्हे पीछे छोडता जा रहा है । एक समय था जब मेहनत मजदूरी के बीच में भी पुरूष बघेली टप्पा गाकर काम किया करते थे और शाम को किसी पेड की छॉव तले एकत्र होकर बिरहा गाते थे पर अब ऐसा नही होता । पहले महिलाएँ बघेली संस्कार गीत, ऋतु गीत , अंजुरी, सोहर, दादर और कजरी जैसे गीतों में रची बसी रहती थी परंतु अब विरले ही किसी को ये गीत आते होंगे। ग्रमीण अंचलों में कुछ हद तक इनकी अनुभूति है किन्तु शनैः - शनैः उसका प्रतिशत भी बुजुर्ग महिलाओ तक सिमट कर रह गया है । बघेलखंड में सामाजिक गीतों का वर्गीकरण बडे ही सुन्दर तरीके से किया गया जैसे कोलदहका को कोल समाज की प्रस्तुति का नाम दिया गया तो अहिराई आहिर समाज की धरोहर रही इसी प्रकार साजन सजनई और कोटबरहाई भी सामाजिक गीतों की श्रेणी में रखे गए । परंपराओ के नाम पर लोक गीतों की कडी इतनी शसकत रही कि लोगो ने हर उत्सव और सामूहिक आयोजन में परंपरागत गीतो को शामिल कर लिया जैसे दुर्गा पूजा में भगते गाना और होली में फाग गीत गाना , इनकी धुने और वाद्य यंत्र सब लोक जीवन की ऐसी प्रवहमान धारा है जिसे कभी नष्ट नही होना चाहिए अपितु नए - नए रूपो में समय ,परिवेश , पर्यावरण के बीच से गतिमान होते रहना चाहिए। यही कारण है कि भारत के अंदर बघेलखंड की इस अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और पंरपरा के प्रति लोगो को जागरूक होना और इसका संरक्षण होना अति आवश्यक है ।

सांस्कृतिक दृश्य पंरपरा के अर्न्तगत बघेली लोक नृत्य के अपने वाद्य , गीत और अवसर हुआ करते थे । वैसे तो बघेलखंड के प्रमुख लोकनृत्य है अहिराई , करमा , कोलदहका , केमाली , राई , दादर , और केहरा । समय के साथ इन नृत्यो का रंग फीका पडने लगा और इनकी प्रस्तुति समिति हो गई या यू कहे कि समाप्ति के शिखर पर पहुँच कर गई । पूर्व में इसका सामाजिक पक्ष बडा आर्कषक था । सदियो से अहीर समाज के लोग कार्तिक महीने मे अहिराई नृत्य का आयोजन करते थे, गोड समाज द्वारा करमा किया जाता था, कोल समाज

द्वारा कुलदहका किया जाता था जिसमें पुरुष हास्य का पुट लिए गीत गाकरअपने साथियो और महिलाओ का मनोरंजन करते थे । वैसे तो बघेलखंड नृत्य और गीत के लालित्य से परिपूर्ण था फिर भी ज्यादातर नृत्य आंशिक रूप से होते रहे जैसे दादर और केहरा । "कालीखप्पर" बघेलखंड का एक मात्र ऐसा नृत्य है जो आज भी लोगो की आस्था से जुडा हुआ है और जवारे के साथ यदा कदा देखने को मिल जाता है ।

कला और संस्कृति के प्रति पूर्णतः समर्पित होने के नाते इस सांस्कृतिक परंपरा को सुदृढ और गतिशील करना मेरा प्रथम कर्तव्य है और जिम्मेदारी भी। इतने सुन्दर और प्रभावी लोकनृत्यो की विलुप्तता का कारण परिस्थितियों से अधिक मनोरंजन का बदलाव है। लोगो ने जमीनी कलाकारो की कला को गाव के किसी कोने में छोड दिया है यही कारण है कि अहिराई और कोलदहका के उस्ताद अपनी कला का स्थांतरण आने वाली पीढी को नही कर पाए । अर्थ के अभाव में ऐसे अनगिनत लो क कलाकारो ने इसे बिसरा दिया है । इन्हे संरक्षण देने के लिए आवश्यकता है ऐसे कला समूहो की जो इनकी कला को व्यावसायिकता प्रदान करा सके । शासन की सुविधा का लाभ इन तक नही पहुच पा रहा है ।

फिल्म और टेलीविजन की दुनिया से कमाया अर्थ और सम्मान की तुलना में इनकी उपलब्धि शून्य है। अगर इसी सम्मान का एक प्रतिशत भी इन लोक कालाकारो को मिल पाया तो ये अपनी पारंपरिक कला को हँसते-हँसते अभिव्यक्त करते रहेगे । इन्हे मार्गदर्शन ,अवसर और मंच देकर हम भारत के इस छोटे से खण्ड की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत का पल्लवन और संरक्षण करने का प्रयास निश्चित रूप से कर सकेंगे और ये पुर्नजीवित होकर अपने अस्तित्व में आ जाएगी ।

Specific Area - Rewa Division, State (M.P.)

बघेलखंड के इतिहास के केन्द्र में बांधवगढ है। बॉधवगढ रीवा राज्य का सुदृढ एवं दुर्गम दुर्ग है। यह दुर्ग सागर सतह से 2664 फीट उचे पर्वत पर स्थित है। पुरातत्व की दृष्टि से भी इसका वैशिष्ट्य उजागर हुआ है । बघेल शासकों के पूर्ववर्ती नरेशों के लिए यह महत्वपूर्ण दुर्ग था। तेरहवी शताब्दी के महाराज कर्ण देव को यह किला कलचुरि नरेश से दहेज के रूप में प्राप्त हुआ था। बघेलों के समृद्धि केन्द्र बॉन्धवगढ ने अनेक युद्धो को देखा था। प्राचीन ग्रंथों में बघेलखंड का एक नाम 'करूष' मिलता है। 'करूष' का शाब्दिक अर्थ क्षुधा होता है। बघेली लोक जीवन अभावों और संकटो से त्रस्त रहा ।अतः करूष (क्षुधा) नामकरण की सार्थकता सिद्ध होती है। जन श्रुति है कि करूष नाम इन्द्र ने दिया था। बघेलखंड का बडा भाग करूष जनपद था जहॉ अनेक जंगली जातियॉ पहले थी और आज भी बसती है। प्रागैतिहासिक काल के साहित्यिक और सांस्कृतिक साक्ष्य बघेलखंड की घाटियों में मौजूद है। ऐतिहासिक काल में यह जनपद मगध साम्राज्य के अर्न्तगत आ गया । चाणक्य की चर्चित कृति अर्थशास्त्र में करूष जनपद के हाथियों का वर्णन मिलता है। मगध साम्राज्य

के पतन के बाद गुप्त साम्राज्य का उत्कर्ष हुआ । बघेलखंड में वाकाटक नृपतियों का अधिपत्य काल उल्लेखनीय है। 250 वर्षो तक वाकाटक नरेशो का उत्कर्ष काल रहा वाकाटकों ने गुप्त सम्रटों की शासन व्यवस्था कला और संस्कृति का अनुसरण किया । विन्ध्य पृष्ठाश्रयी जनपद बघेलखंड के एक छोर मे अमरकंटक और दूसरे छोर में चित्रकूट हैं । ग्रमीण सम्यता और संस्कृति वाला यह जनपद अपनी निजता के साथ पर्वत मालाओं से आवेष्टित है। कोठी , सोहावल , मैहर , बरौंधा , जसो और नागौद की रियासतें बघेलखंड की परिधि में आती है। सम्प्रति प्रशासनिक दृष्टि से बघेलखंड के अर्न्तगत रीवा , सतना , सीधी, शहडोल और सिंगरौली जिले आतें है । वैसे तो मुगल शासन काल में बघेलखंड नाम प्राय लुप्त रहा किन्तु जब सन् 1853में मौन कवि ने बघेलखंड शब्द का प्रयोग किया तभी से इसमें निरंतरता पाई गई । सन् 1862 में बघेलखंड का क्षेत्र विस्तार सुनिश्चित हो गया । बघेलखंड में 34 पीढियों तक बघेल शासकों की सत्ता रही तथा बघेलराजवंश की रानियों की शौर्य गाथा आज भी इतिहास में अमर है। बघेलखंड के अंतिम नरेश महाराज मार्तण्ड सिंह रहें ।

Time Frame of the Project

1st April 2015 to 31st March 2016

① Six months for Folk Songs of Baghelkhand.
② Six Months for Folk Dances of Baghelkhand.

Conclusion of the Project

बघेलखंड की विलुप्त होती लोक कलाओं को सहेजकर रखना ताकि आने वाली पीढ़ियाँ इसके आनंद और महत्व से वंचित न रह जाए। बघेलखंड मे लोक गीतों का संसार बड़ा वृहद है मैं अपने शोध और संग्रह से इसको पल्लवित करना चाहती हूँ तथा लोक नृत्य की थाप को अनवरत रखते हुए इस कला को जीवंत करना चाहती हूँ।